* श्री *
तिथि-पर्व-निर्णय
सम्वत २०३७ शकाब्द १९०२ सन १९८०-८१
राजा
चन्द्र
मंत्री
सूर्य
प्रकाशक—
श्री सारस्वत सभा, काशी

SIMPLEX WOOLLEN MILLS

(Prop. : Seth Industries Limited)

★

Office :

Sadhana Rayon House
2nd floor, Dr. D. N. Road
BOMBAY-400 001

Telephone : 266041 3 Lines
Telex—011-2925
Cable—SHODDYMILL

Mills :

Swami Vivekanand Road
P. B. No. 8206
Dahisar,
BOMBAY-400 068

Tele : 662311

WOOLLEN BLNKET
AND
MUFFLERS, BLZERS

॥ श्रीहरिः ॥

॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

तिथिपर्व-निर्णय

विक्रम सम्वत् २०३७, श्री शालिवाहन शाके १९०२, ईसवीय सन् १९८०-८१

राजा — **मंत्री**

चन्द्र — **सूर्य**

॥ श्रीमुख नामसंवत्सर ॥

गतकलिः ५०८१	बंगला सन् १३८६-८७, हिजरी सन् १४००-१४०१, फसली सन् १३८७-८८
गुरु (तारा)	भाद्रपद कृष्ण ३, गुरुवार, दिनांक २८-८-८० को पश्चिम में अस्त होंगे । आश्विन कृष्ण १, गुरुवार, दिनांक २५-९-८० को पूर्व में उदय होंगे ।
गुरु—	भाद्रपद शुक्ल ६, सोमवार, दिनांक १५-९-८० को कन्या राशि के होंगे ।
शुक्र (तारा)	अधिक ज्येष्ठ कृष्ण १२, मंगलवार, दिनांक १०-६-८० को पश्चिम में अस्त होंगे । शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल ८, शुक्रवार, दिनांक २०-६-८० को पूर्व में उदय होंगे । फाल्गुन कृष्ण ४, सोमवार, दिनांक २३-२-८१ को पूर्व में अस्त होंगे और आगामी सम्वत् २०३८ के प्रारंभ में उदय होंगे ।
शनि—	वर्ष भर कन्या राशि पर ही रहेंगे ।
(विवाह के मुहूर्त)	वैशाख शुक्ल-पक्ष, शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण-पक्ष, शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल-पक्ष, आषाढ़ कृष्ण-पक्ष १ लग्न है । मार्गशीर्ष शुक्ल-पक्ष, कार्तिक शुक्ल-पक्ष, मार्गशीर्ष कृष्ण-पक्ष पौष शुक्ल-पक्ष, माघ कृष्ण-पक्ष, माघ शुक्ल-पक्ष, फाल्गुन कृष्ण-पक्ष ।

सम्पादक—

डा० पं० शिवनारायण झिंगन, एच्. एम्. बी., बी. बी. एम्.

(पंजीकृत होमियोपैथ)

प्रकाशक

श्री सारस्वत सभा काशी

१८६० की २१वीं धारा के अंतर्गत पंजीकृत संख्या २५८-१९४९-५०

कार्यालय—श्री सारस्वत सभा भवन, सी० के० ९/२-९/२२ मणिकर्णिका तीर्थ

वाराणसी-२२१००१

बाहर से पत्रिका मंगानेवाले महानुभावों को
५० पैसे का डाक टिकट भेजना आवश्यक है

निःशुल्क

प्राक्कथन

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वालार्क-मण्डलाभासां शीतांशु किरणोज्ज्वलाम् ।
श्वेत-हंस-समासीनां वन्दे नील सरस्वतीम् ॥

परापराणां परमा परमेश्वरी माँ भारती की वीणा से झंकृत नाद ब्रह्म की त्रिगुणात्मक तालें, कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों का सृष्टि-स्थित लयात्मक संवहन अजस्र कर रही हैं। इसी क्रम में मध्यावधि चुनाव के परिणामस्वरूप देश में उदीयमान धूमकेतुओं का अवसान मानो इन्दिरा के उदय के रूप में हुआ है, जो देश के लिये शुभ लक्षण है। हमें विशेष गौरव की अनुभूति इसलिये भी है कि आज देश के प्रवुद्ध नागरिकों ने देश की वर्त्तमान डगमगाती स्थिति के लिये जिम्मेदार घोर आत्मघ्न तथाकथित धूमकेतुओं को चुनावास्त्र से सम्प्रेक्षित कर अतीत के गर्भ में झोंक देश के भाग्य की वागडोर पुनः उन सुदृढ़ हाथों में सौंप दी है जो इस सारस्वत समाज की ही बेटी हैं। हम नव-वर्ष के इस सौरभ सुमन को माँ भारती के पावन चरणों में सर्मपित कर माँ से प्रार्थना करते हैं कि मां इन्दिरा को सद्‌बुद्धि एवं दीर्घायुष्य प्रदान करें जिससे उनकी यह वेटी इस देश के अभ्युदय के लिये निःस्वार्थ अग्रसर रहे और आनेवाले इतिहास के पृष्ठों पर इसका नाम इसके प्यारे देश के नाम के साथ-साथ स्वर्णाक्षरों में अंकित हो।

यही माँ भारती का प्रसादस्वरूप २६वाँ पुष्प हम अपने प्रिय पाठकों के करकमलों में सादर अर्पित कर उनके समुज्ज्वल सौभाग्यमय नूतन वर्ष की कामना करते हैं।

श्रद्धाञ्जली

विगत वर्ष ने हमसे वयोवृद्ध समाजरत्न श्यामसुन्दर जी पाठक, पं० हीरालालजी पाठक, पं० गोपाललालजी कालिया, ओंकारनाथजी मोहिले, राजकुमार मिश्र डोगरे, रवीन्द्र जैतली, बल्लभजी लव, विजय भारद्वाज, राजकुमार पाठक, तथा विश्वंभर नाथ मोहले प्रभृति महानुभावों को हमसे विलग कर दिया। हम भूतभावन शंकर से इन दिवंगतात्माओं के कैवल्य एवं इनके वियोगी परिवारों के संतप्त हृदयों की शान्ति के प्रार्थी हैं।

पत्रिका प्रकाशन—

पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष है। इसकी साज-सज्जा, कागज, छपाई एवं हमारा इसे निःशुल्क वितरण करने का यथावत् संकल्प भी आपके समक्ष है। आज दिन-दूनी रात-चौगुनी सुरसा के मुख-सी बढ़ती महंगाई भी हमारे पाठकों से छुपी नहीं है। हम बराबर अपने उदारमना पाठकों से एतदर्थ निवेदन करते आये हैं। इस सन्दर्भ में हम बाबू लक्ष्मणदासजी कपूर, बम्बई, और बाबू कार्तिक प्रसाद जी खन्ना, कलकत्ता, के अमूल्य सहयोग के आभारी हैं तथा हम ईश्वर से उनकी दीर्घायुष्य की कामना करते हैं। विश्वेश्वर उन्हें सर्वदा शुभ कार्यों की प्रेरणा दें। धन-धान्य, पुत्र-पौत्रों से सर्वदा समृद्ध हों, यही हमारा शुभाशीर्वाद है। हम इन्हीं कालमों में बराबर अपने वितरक बन्धुओं से यही निवेदन करते रहे हैं। हम उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे आजीवन सदस्य एवं विज्ञापन-संग्रह अपने-अपने क्षेत्रों से कर हमें अपना सहयोग दें। आजीवन सदस्यता शुल्क पच्चीस रुपया मात्र है। वे अधिकाधिक अपने क्षेत्रों से एतदर्थ प्रयत्न कर पत्रिका प्रकाशन के पुण्य भागी बनें। अर्थाभाव के कारण हमारे मार्ग की अवरुद्धता ही हमें सीमित प्रतियाँ प्रकाशित

करने को विवश करती है। परिणामस्वरूप आज हमारी पत्रिका की नकल की परिपाटी चल पड़ी है। यह प्रवृत्ति श्लाघ्य नहीं हैं। हमारा पत्रिका प्रकाशन न अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये है न व्यक्तिगत श्रेय के लिये, जो कुछ भी है समष्टि कल्याण की भावना है। हमारी पत्रिका के सम्पादक मण्डल द्वारा एतदर्थ निःस्वार्थ श्रम, लगन और सेवा स्तुत्य है। इस पत्रिका के लिये जो निःस्वार्थ सेवा, श्रम एवं अपना अमूल्य समय वे लगाते हैं, श्लाघनीय है। अतः हम अपने उन बन्धुओं से जो किसी भी प्रेरणा वश इसकी प्रतिलिपियाँ विभिन्न नामों से छपवाने का श्रम करते हैं, उनसे हमारी करबद्ध प्रार्थना है कि यदि वे हमें अपना सहयोग दें, तो हम और अधिक सेवा करने में सक्षम हों। उन्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि हमारा प्रयत्न समाज के लिये है और वे भी इसी समाज के अंग हैं। अतः यदि उनका लक्ष्य स्वश्रेय और स्वकल्याण नहीं है, तो हमारे लिये उनका सहयोग, इस धर्मयज्ञ में, चरूवत् ग्राह्य होगा। हम अपने पुनीत संकल्प, कि यह पत्रिका सम्पूर्ण विश्व के हिन्दुओं के पास पहुंचे, और हम उनका धार्मिक सहयोग करने, की पावन दिशा में कुछ कदम और अग्रसर होंगे। आशा है वे हमारी प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

धन्यवाद प्रकाश—

हम पं० बालकृष्णजी कपूरिया के विशेष आभारी हैं, जो सभा के माननीय सभापति होने के बावजूद सभा में हर छोटे-बड़े कार्य को सहर्ष निःस्वार्थ भाव से सर्वदा करने को कटिबद्ध रहते हैं। मनसावाचाकर्मणा समाज और सभा की सेवा में सतत् रत इस जातिरत्न, महामानव ब्राह्मणरत्न की हम सदैव विश्वनाथ अन्नपूर्णा से दीर्घायुष्य की कामना करते हैं। बाबा इन्हें शतायु करें और आजन्म ये अपने सेवाव्रत में लगे रहें। पत्रिका के सम्पादक मण्डल एवं संयोजक डा० रामरंग शर्मा, एम० ए०, पं० अमरनाथजी जैतली याज्ञिक, प्रं० प्रेमनाथजी डोगरा, बी० ए०, पं० रेशमलाल जी झिंगन के सहयोग के भी हम आभारी हैं। हम अपने आजीवन सदस्यों एवं इस पत्रिका के विज्ञापन-दाता बन्धुओं के भी आभारी हैं। हम सभा की ओर से इन्हें धन्यवाद देते हैं। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि नूतन वर्ष सभी के लिये मंगलमय हो। पत्रिका के सम्पादनार्थ हमने जिन आर्ष ग्रंथों एवं पंचांगों से यत्किंचित् सहायता ली है, हम उनके सधन्यवाद आभारी हैं। शुभं भूयात्।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत्॥

भवदीय
शिवनारायण झिंगन
प्रधान मंत्री
श्रीसारस्वत सभा, काशी

श्री सारस्वत सभा, काशी

का

संरक्षक-मंडल

माननीय पण्डित सन्त छोटे जी महाराज "मानस राजहंस"
- ,, ,, विश्वनाथ प्रसाद जी तिक्खे, एम० ए०
- ,, ,, मदन लाल जी मिश्र कालिया—राष्ट्रकर्मी
- ,, ,, राम मोहन जी शास्त्री, बी० ए०, प्रधानाचार्य, मारवाड़ी संस्कृत कालेज, वाराणसी
- ,, ,, राम लाल जी शास्त्री, साहित्य शिरोमणि
- ,, ,, राधेकृष्ण जी मिश्र वग्गे
- ,, ,, शिवनाथ जी मोहले वैद्य, आयुर्वेदाचार्य
- ,, ,, डा० अमरनाथ जी शर्मा (नेत्र रोग विशेषज्ञ)

सन् ७९-८० की कार्यकारिणी समिति एवं उप-समितियों के पदाधिकारियों की सूची

पण्डित श्री बालकृष्ण कपूरिया, कर्मकाण्डी राज पुरोहित (सभापति)
- ,, ,, पूरनचन्द्र पाठक, भूतपूर्व नगर-प्रमुख, वाराणसी (उपसभापति)
- ,, ,, डा० रजनी कान्त दत्ता, एम० बी० बी० एस० (उपसभापति)
- ,, ,, डा० शिवनारायण झिंगन, एच० एम०, बी. बी० बी० एम० (पंजीकृत होमियोपैथ) (प्रधान मन्त्री)
- ,, ,, लक्ष्मीनारायण भारद्वाज, एडवोकेट (मन्त्री)
- ,, ,, किरन शर्मा, एडवोकेट (मन्त्री)
- ,, ,, केदारनाथ मोहले (कोषाध्यक्ष)
- ,, ,, प्रेमनाथ डोगरा, बी० ए० (मंत्री, पुस्तकालय वाचनालय समिति)
- ,, ,, डा० रामरंग शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डी० ए० वी० डिग्री कालेज, वाराणसी (संयोजक—तिथि-पर्व निर्णय समिति)
- ,, ,, रमेश चन्द्र कपूरिया (संयोजक—अर्थ समिति)
- ,, ,, अमरनाथ जैतली याज्ञिक कुण्ड मण्डप केसरी (संयोजक—शिक्षा समिति)
- ,, ,, रेशम लाल झिंगन पुरोहित (संयोजक—वस्तु भण्डार समिति)
- ,, ,, राम किशोर मिश्र वग्गे, एम० ए० (संयोजक—व्यायाम समिति)
- ,, ,, राम किशोर जैतली (संयोजक—जातीय विवरण पुस्तिका समिति)
- ,, ,, ओम् प्रकाश कुमड़िये (संयोजक—सेवा समिति)

सदस्यगण

पण्डित श्री काशीनाथ झिंगरन, बी० काम०
- ,, ,, गणेशनाथ मोहले
- ,, ,, मोतीचन्द शर्मा, एम० ए०, बी० टी०, भूतपूर्व शिक्षाध्यक्ष, नगर महापालिका, वाराणसी
- ,, ,, बद्रीनाथ पाठक
- ,, ,, चन्द्र कुमार तिक्खे
- ,, ,, विश्वनाथ वशिष्ठ

पण्डित श्री कैलाशनाथ जैतली, आयुर्वेदाचार्य, बी० आई० एम० एस०, दूतनाड़ी विशेषज्ञ
- ,, ,, ओम प्रकाश शर्मा भटूरिये
- ,, ,, लक्ष्मीनाथ सण्ड, बी० ए०
- ,, ,, प्रेम शंकर मिश्र
- ,, ,, कृष्ण चन्द्र शर्मा राजमैते
- ,, ,, श्री कृष्ण मिश्र कालिया

बिना मूल्य की

'तिथि-पर्व-निर्णय' पत्रिका, काशी के अतिरिक्त निम्नलिखित नगरों में भी प्राप्त की जा सकती है।

लिखित स्थानों में किसी प्रकार का व्यय नहीं लगता है। काशी से मँगानेवाले सज्जनों को ५० पैसे डाक व्यय भेजना आवश्यक है।

(वितरक वन्धुओं से निवेदन)

कृपया पत्रिका की प्राप्ति स्वीकार एवं संलग्न कार्ड अवश्य भेजें, अन्यथा सभा के निर्णयानुसार अगले वर्ष से नाम पृथक कर दिया जायेगा एवं पत्रिका भेजने में सभा असमर्थ होगी।

अमृतसर— पं० श्री शम्भूनाथ जैतली काशीवाले, कटरा दुलों, गली वावेयाँ।
अमृतसर— ,, ,, वृजमोहन शर्मा, कुँचा भाई सन्तसिंह।
लखनऊ— ,, ,, प्रमोद कालिया, जी-१/३ पेपर मिल कालोनी।
दिल्ली— ,, ,, मुन्नू लाल मिश्र, वड़ा मन्दिर, कटरा नील।
दिल्ली— ,, ,, श्री कृष्ण शर्मा बग्गे, घड़ीवाले, ४७०४ (क्लाथ मार्केट), लक्ष्मी बाजार।
दिल्ली— ,, ,, डा० किशन नारायण मोहले, बड़ा छीपीवाड़ा।
आगरा— ,, ,, वृजनाथ जैतली, माईथान।
आगरा— ,, ,, वदरी प्रसाद मोहले, (पांडेजी), शीतला गली।
आगरा— ,, ,, उदयशंकर जी कुमड़िया, १८/१११ माईथान।
शाहजहाँपुर— ,, ,, विश्वनाथ कपूरिया, भीतरी गली, मोती चौक।
कानपुर— ,, ,, रतन चन्द कालिया, १९ मुन्नालाल स्ट्रीट, परेड।
कानपुर— ,, ,, इन्द्रनारायन झिंगन, ३१/७७, वेल्दारी मुहाल।
लखनऊ— ,, ,, पण्डित श्री प्रेमनारायण मोहले, देहली क्लाथ मिल्स स्टोर्स, हजरतगंज।
लखनऊ— ,, ,, पण्डित श्री योगेन्द्रनाथ शर्मा, बड़ी काली जी के पास (चौक)।
फैजावाद— ,, ,, अभयचंद कालिया, रेलवे सिटी बुकिंग एजेन्सी, रकावगंज।
फैजावाद— ,, ,, देवी नारायण शर्मा, इलाहावाद बैंक।
इलाहावाद— ,, ,, महावीर प्रसाद सारस्वत, ६५, भारती भवन।
इलाहाबाद— ,, ,, रामगोपाल संड, एम० ए०, एम० एड०, कल्यानी देवी।
मुरादाबाद— ,, ,, श्री पन्नालाल पाठक, लोहागढ़।
मेरठ— ,, ,, मनोज जोशी, ३५ ए, न्यू मार्केट, बेगमपुल।

विन्ध्याचल—	पण्डित श्री कन्हैयालाल झिंगन, व्यवस्थापक, श्री सारस्वत खत्री धर्मशाला ।
मिर्जापुर—	पण्डित श्री हरनाथ मोहले, वैद्य, बुन्देलखण्डी मोहाल ।
गोरखपुर—	श्री राजेन्द्र प्रसाद भल्ला, भल्ला डीजल्स, सिनेमा रोड ।
पटना सिटी—	पण्डित श्री गोवर्द्धन नाथ, कचौड़ी गली ।
	पण्डित श्री चुन्नीलाल जी एडवोकेट, कचौड़ी गली ।
दरभंगा—	पण्डित श्री भोलानाथ जेतली, जेतली स्वीट्स एण्ड सोप इन्डस्ट्रीज, काली स्थान ।
वर्दवान—	पण्डित श्री रामाशंकर मिश्र, चावल पट्टी, नोतुनगंज ।
कलकत्ता—	श्री लक्ष्मीनारायण झिंगन, हनुमान मन्दिर, महात्मा गांधी रोड ।
	श्री वैजनाथ मेहरोत्रा, १७८, महात्मा गाँधी रोड ।
कलकत्ता-७—	श्री कार्तिक प्रसाद खन्ना, ५१, वाराणसी घोष स्ट्रीट ।
मालीगाँव [आसाम]—	डाक्टर श्री प्रेमनाथ झिंगरन, क्वार्टर नं० १५६, गौशाला रोड, माली गाँव, गौहाटी ७८१०११, असम
गाडरवाड़ा [मध्य प्रदेश]	डाक्टर भास्करदत्त जैतली काशी वाले, सारस्वत सदन ।
पिनांग [मलाया]	पण्डित आर. के. शर्मा, बार-एट-लॉ, ५ नार्गन रोड ।
रायपुर—	पण्डित फूलचन्द्र मिश्रा, अलका भवन, नं० ६२ विवेकानन्द कालोनी ।
वम्बई—	पण्डित श्री इन्द्रदत्त शर्मा, एडवोकेट, ६२ आनन्दनगर, ७ जुहूतारा ।
	पण्डित त्रिलोकी नाथ जैतली, ४६ निवाना, पाली हिल, बान्द्रा, वम्बई-५४ ।
	श्रीमान् लक्ष्मनदास कपूर, एच. नारायनदास एण्ड कम्पनी, ४१/४३ चम्पागली, बम्बई ४००००२
England	Mr. B. D. Mehra, 76 Trinity Road, South Hall, Middlessex.
U. S. A.	Mr. K. L. Kool, Road No. 288, Bidwill, Ohio.

तिथि-पर्व-निर्णय का वाराणसी में प्राप्तिस्थान—

१—आचार्य श्री पण्डित रामलाल जी शास्त्री—साहित्य-शिरोमणि, डी० ३/६२ लाहोरी टोला ।

२—पण्डित राधेकृष्ण जी मिश्र, निष्काम औषधालय, सरस्वती फाटक ।

३—पण्डित बालकृष्ण जी कपूरिया कर्मकाण्डी, राज पुरोहित, ७/७० सिद्धेश्वरी ।

४—डा० पण्डित शिवनारायण जी झिंगन, एच. एम. बी., बी. बी. एम्., आनन्द होमियो सदन, सिद्धेश्वरी ।

५—पण्डित अमरनाथ जी जैतली याज्ञिक, कुण्डमण्डप केसरी, अमर भवन, २३/७६, मंगलागौरी ।

६ पण्डित शिवनाथजी वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, जतनवर ।

७—डा० रामजी जेतली, एम. ए. एस., २/२७, राम भवन, कामेश्वर महादेव (गायघाट) ।

८—श्री लक्ष्मीनारायणजी भारद्वाज, एडवोकेट (गायघाट) ।

❀ तिथि-पर्व-निर्णय-समिति ❀

संयोजक—

डॉ० राम रंग शर्मा — एम० ए०, पी० एच० डी०, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डी० ए० वी० डिग्री कालेज

पं० श्री रामनाथ शारद, — वेदमूर्ति "याज्ञिक शिरोमणि"

" " रामलाल शास्त्री, — साहित्य शिरोमणि

सभापति—

" " बाल कृष्ण कपूरिया, — कर्मकाण्डी, राज-पुरोहित

प्रधान मंत्री—

" " डॉ० शिवनारायण मिशन, एच० एम० बी०, बी० बी० एम० (पंजीकृत होमियोपैथ)

" " अमर नाथ जैतली, — याज्ञिक, कुण्डमण्डप केशरी

" " रेशम लाल मिशन; — पुरोहित

" " प्रेमनाथ शर्मा डोगरा, बी० ए०

❋ श्री श्री पराम्बा दुर्गादेव्यै नमः ❋

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतो खिलस्य ।
प्रसीदविश्वेश्वरि पाहिविश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

वैशाख शुक्ल पक्ष (१६ अप्रैल से ३० तक)

अं.ता. वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
६बु.	१	६/४	४५/५५	भ.	३	१४	प्री.	२१	४२	व.	७	२४	वा.	१८/५	३२/२०				५/५६	६/१६
७गु.	३	२	५५	कृ.	२	११	आ.	१९	५	तै.	१६	२५	ग.	३	३१	वृ.	८	५८	५/५५	६/२०
८शु.	४	१	२६	रो.	१	२८	सौ.	१६	४३	व.	१४	४६	वि.	२	२				५/५४	६/२०
९श.	५	०	२७	मृ.	१	१०	शो.	१४	४२	व.	१३	२६	वा.	०	५७	मि.	१३	१९	५/५४	६/२१
१०र.	६	२३	५३	आ.	१	१९	ऽगं.	१२	५९	कौ.	१२	३८	तै.	०	१९				५/५३	६/२१
११सो.	७	२३	५०	पु.	१	५८	सु.	११	४०	ग.	१२	१५	व.	०	११	कं.	१९	४८	५/५२	६/२२
२२मं.	८	०	१८	पु.	३	५७	धृ.	१०	४६	वि.	१२	२३	व.	०	३५				५/५१	६/२२
२३बु.	९	१	१४	श्ले.	४	४४	शू.	१०	१७	वा.	१२	५९	कौ.	१	२४	सिं.	४	४४	५/५०	६/२३
२४गु.	१०	२	४०	म.	सम्पूर्ण		गं.	१०	८		१	१४	६ग.	२	४९				५/४९	६/२३
२५शु.	११	४	२५	म.	६	४७	वृ.	१०	२०	व.	१५	४०	वि.	४	३२				५/४८	६/२४
२६श.	१२	सम्पूर्ण		पू.	६	६	ध्रु.	१०	४७	व.	१७	३०	वा.	सम्पूर्ण		कं०	१५	४८	५/४७	६/२४
२७र.	१२	६	२५	उ.	११	४४	व्या.	११	२२	वा.	६	२६	कौ.	१९	३०				५/४६	६/२५
२८सो.	१३	८	२६	ह.	१४	२१	ह.	११	५९	तै.	८	३२	ग.	२१	३१	तु.	३	३५	५/४५	६/२५
२९मं.	१४	१०	२६	चि.	१६	५०	व.	१२	३१	व	१०	३०	वि.	२३	२२				५/४५	६/२६
३०बु.	१५	१२	८	स्वा.	१९	२	सि.	१२	५०	व.	१२	१४	वा	१	१				५/४४	६/२६

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (१ मई से १४ तक)

अं.ता. वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	कं.	घं.	मि.	क.	घ.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
१गु.	१	१३	२८	वि.	२०	५२	व्य.	१२	५३	कौ.	१३	४९	तै.	२	१७	वृ.	१४	२४	५/४४	६/२७
२शु.	२	१४	२०	ऽनु.	२२	१३	व.	१२	३४	ग.	१४	४४	व.	२	५७				५/४३	६/२७
३श.	३	१४	४२	ज्ये.	२३	५	प.	११	५१	वि.	१५	१०	व.	३	७	ध.	२३	५	५/४३	६/२८
४र.	४	१४	३२	मू.	२३	२५	शि.	१०	४४	वा.	१५	४	कौ.	२	४८				५/४२	६/२८
५सो.	५	१३	५३	पू.	२३	१७	सि.	९	१२	तै.	१४	२९	ग.	१	५९	म.	५	९	५/४१	६/२९
६मं.	६	१२	४५	उ.	२२	४२	सा.	७/५	१/८	व.	१३	२७	वि.	०	३८				५/४०	६/२९
७बु.	७	११	१४	श्र.	२१	४९	शु.	२	३५	व.	११	४८	वा.	२२	५४				५/३९	६/३०
८गु.	८	९	२२	ध.	२०	३४	ब्रं.	२३	५१	कौ	१०	०	तै.	२०	५९	कुं.	९	११	५/३८	६/३१
९शु.	९	७/४	१९/५८	श.	१९	९	ऐं.	२०	५७	ग.	७	५७	व.	१८	४९				५/३८	६/३२
१०श.	११	२	३२	पू.	१७	३२	वै.	१७	५७	वि.	५	४१	व.	१९/५	२९/५८	मी.	११	५६	५/३७	६/३२
११र.	१२	०	५	उ.	१५	५१	वि.	१४	५३	कौ.	१४	४	तै.	०	५०				५/३७	६/३३
१२सो.	१३	२१	३९	रे.	१४	१२	प्री.	११	५०	ग.	११	३७	व.	२२	२५	मे.	१४	१२	५/३६	६/३३
१३म.	१४	१९	२२	अ.	१२	४०	आ.	८	५२	वि.	९	१३	श.	२०	२				५/३६	६/३४
१४बु.	३०	१७	१६	भ.	११	१७	सौ.	९/५	०/२२	च.	६	५९	ना.	१७/४	५९/५९	वृ.	१७	०	५/३५	६/३४

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (१५ मई से २९ तक)

अं.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	नं.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
१५	गु.	१	१५	२७	कृ.	१०	११	ऽगं.	१	०	व.	१६	२	वा.	३	१६				५/१८	६/३८
१६	शु.	२	१३	५९	रो.	९	२४	सु.	२२	५४	कौ.	१४	२६	तै.	१	५४	मि.	२१	१२	५/१४	६/३८
१७	श.	३	१२	५५	मृ.	९	०	धृ.	२१	१०	ग.	१३	१९	व.	१	५				५/१४	६/३६
१८	र.	४	१२	१९	आ.	९	२	शू.	१९	४८	वि.	१२	५०	व.	०	३९	क.	३	२७	५/१३	६/३६
१९	सो.	५	१२	१२	पु.	९	३४	गं.	१८	५०	वा.	१२	२७	कौ.	०	३८				५/१२	६/३७
२०	मं.	६	१२	३९	पु.	१०	३८	वृ.	१८	१८	तै.	१२	४८	ग.	१	१५				५/१२	६/३७
२१	बु.	७	१३	३४	श्ले.	१२	१०	ध्रु.	१८	६	व.	१३	४०	वि.	२	२१	सिं.	१२	१०	५/१२	६/३८
२२	गु.	८	१४	५७	म.	१४	९	व्या.	१८	१७	व.	१५	१	वा.	३	५२				५/१२	६/३८
२३	शु.	९	१६	४१	पू.	१६	३०	ह.	१८	४४	कौ.	१६	४२	तै.	सम्पूर्ण		कं.	२३	८	५/१२	६/३९
२४	श.	१०	१८	३९	उ.	१९	३	व.	१९	१९	तै.	५	४१	ग.	१८	४०				५/११	६/३९
२५	र.	११	२०	४३	ह.	२१	४१	सि.	१९	५९	व.	७	४१	वि.	२०	४२				५/११	६/४०
२६	सो.	१२	२२	३९	चि.	०	१३	व्य.	२०	३४	व.	९	४३	वा.	२२	४५	तु.	१०	५६	५/१०	६/४०
२७	मं.	१३	०	१०	स्वा.	२	२९	व.	२०	५९	कौ.	११	३३	तै.	०	२३				५/१०	६/४१
२८	बु.	१४	१	४०	वि.	४	२४	प.	२१	७	ग.	१३	३	व.	१	४४	वृ.	२१	५९	५/१०	६/४१
२९	गु.	१५	२	३०	ऽनु.	सम्पूर्ण		शि.	२०	५२	वि.	१४	११	व.	२	३९				५/९	६/४२

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (३० मई से १२ जून तक)

अं.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
३०	शु.	१	२	५२	ऽनु.	५	५२	सि.	२०	१७	वा.	१४	५७	कौ.	३	४				५/९	६/४२
३१	श.	२	२	४२	ज्ये.	६	५१	सा.	१९	१७	तै.	१५	१	ग.	२	५९	ध.	६	५१	५/९	६/४३
१	र.	३	२	३	मू.	७	१८	शु.	१७	५३	व.	१४	४१	वि.	२	२४				५/९	६/४३
२	सो.	४	०	५५	पू.	७	१६	शु.	१६	६	व.	१३	५३	वा.	१	२२	म.	१३	९	५/९	६/४४
३	मं.	५	२३	२५	उ.	६	४८	ब्र.	१३	५९	कौ.	१२	३८	तै.	२३	५५				५/९	६/४४
४	बु.	६	२१	३३	श्र.	६/४	५/२०	ऐं.	११	३५	ग.	११	१	व.	२२	८	कुं.	१७	२५	५/९	६/४५
५	गु.	७	१९	२६	श.	३	२७	वै.	८	५५	वि.	९	५	व.	२०	३				५/९	६/४५
६	शु.	८	१७	७	पू.	१	५३	वि.	६/२	४/६	वा.	६	५४	कौ.	१७/४	५४/२	मी.	२०	१६	५/९	६/४५
७	श.	९	१४	४०	उ.	०	१२	आ.	०	३	ग.	१५	१९	व.	२	३				५/९	६/४६
८	र.	१०	१२	१०	रे.	२२	३१	सौ.	२१	०	वि.	१२	४६	व.	२३	३५	मे.	२२	३१	५/८	६/४६
९	सो.	११	९	४४	अ.	२०	५६	शो.	१८	०	वा.	१०	२४	कौ.	२१	१५				५/८	६/४६
१०	मं.	१२	७	२६	भ.	१९	३१	ऽगं.	१५	९	तै.	८	५	ग.	१९	०	वृ.	१	१३	५/८	६/४७
११	बु.	१३	५/३	१९/२८	कृ.	१८	२०	सु.	१२	२८	व.	५	५५	वि.	१९/४	५८/१				५/८	६/४७
१२	गु.	३०	१	५८	रो.	१७	३०	धृ.	१०	४	च.	१५	१४	ना.	२	२७				५/८	६/४७

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (१३ जून से २८ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	नं.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१३	शु.	१	०	५१	मृ.	१७	०	शू.	७	५५	कि.	१३	५१	व.	१	१६	मि.	५	१५	५/८	६/४८
१४	श.	२	०	१२	आ.	१६	५६	गं.	६/४	७/४८	वा.	१२	५४	कौ.	०	३२				५/८	६/४८
१५	र.	३	०	४	पु.	१७	२२	ध्रु.	३	४०	तै.	१२	२५	ग.	०	१८	क.	११	१५	५/८	६/४८
१६	सो.	४	०	२७	पु.	१८	१८	व्या.	३	३	व.	१२	२६	वि.	०	३४				५/८	६/४८
१७	मं.	५	१	२०	श्ले.	१९	४५	ह.	२	४९	व.	१२	५८	वा.	१	२१	सिं.	१९	४५	५/८	६/४८
१८	बु.	६	२	४०	म.	२१	३९	व.	२	५८	कौ.	१३	५८	तै.	२	३६				५/९	६/४९
१९	गु.	७	४	२१	पू.	२३	५४	सि.	३	२२	ग.	१५	२४	व.	४	१३				५/९	६/४९
२०	शु.	८	सम्पूर्ण		उ.	२	२५	व्य.	३	५७	वि.	१७	९	व.	सम्पूर्ण		कं.	६	३१	५/९	६/४९
२१	श.	८	६	१८	ह.	५	३	व.	४	३८	व.	६	५	वा.	१९	५				५/९	६/४९
२२	र.	९	८	२०	चि.	सम्पूर्ण		प.	सम्पूर्ण		कौ.	८	५	तै.	२१	३	तु.	१८	१९	५/९	६/४९
२३	सो.	१०	१०	१८	चि.	७	३७	प.	५	१७	ग.	१०	१	व.	२२	५२				५/१०	६/५०
२४	मं.	११	१२	०	स्वा.	९	५८	शि.	५	४४	वि.	११	४४	व.	०	३१				५/१०	६/५०
२५	बु.	१२	१३	२०	वि.	११	५८	सि.	५	५६	वा.	१३	१८	कौ.	१	४६	वृ.	५	२८	५/१०	६/५०
२६	गु.	१३	१४	१३	अनु.	१३	३१	सा.	५	४७	तै.	१४	१४	ग.	२	२७				५/१०	६/५०
२७	शु.	१४	१४	३६	ज्ये.	१४	३६	शु.	५/४	१६/२३	व.	१४	४०	वि.	२	३८	ध.	१४	३६	५/१०	६/५०
२८	श.	१५	१४	२८	मू.	१५	११	ब्र.	३	५	व.	१४	३७	वा.	२	२०				५/११	६/५१

आषाढ़ कृष्ण पक्ष (२९ जून से १२ जुलाई तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घ.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२९	र.	१	१३	५०	पू.	१५	१६	ऐं.	१	२१	कौ.	१४	३	तै.	१	३२	म.	२१	१०	५/११	६/५१
३०	सो.	२	१२	४४	उ.	१४	५४	वै.	२३	१९	ग.	१३	२	व.	०	१२				५/१२	६/५१
१	मं.	३	११	१४	श्र.	१४	९	वि.	२०	५८	वि.	११	२२	व.	२२	३०	कुं.	१	३६	५/१२	६/५१
२	बु.	४	९	२३	ध.	१३	४	प्री.	१८	२०	वा.	९	३७	कौ.	२०	३५				५/१२	६/५१
३	गु.	५	७/४	१७/५८	श.	११	४३	आ.	१५	३२	तै.	७	३३	ग.	१८	२५	मी.	४	३३	५/१३	६/५१
४	शु.	७	२	३०	पू.	१०	१०	सौ.	१२	३४	व.	५	१७	वि.	१५/२	५७/५२				५/१३	६/५०
५	श.	८	०	१	उ.	८	३१	शो.	९	३३	वा.	१३	३७	कौ.	०	२२				५/१३	६/५०
६	र.	९	२१	३४	रे.	६	५२	ऽगं.	६/३	३०/२०	तै.	११	९	ग.	२१	५१	मे.	६	५२	५/१४	६/५०
७	सो.	१०	१९	१४	अ.	५/३	१५/४६	धृ.	०	३६	व.	८	४३	वि.	१९	३१				५/१४	६/५०
८	मं.	११	१७	७	कृ.	२	३३	शू.	२१	५४	व.	६	२५	वा.	१७/४	१६/२०	वृ.	९	२६	५/१५	६/५०
९	बु.	१२	१५	१३	रो.	१	३८	गं.	१९	२५	तै.	१५	२२	ग.	२	३२				५/१५	६/५०
१०	गु.	१३	१३	४२	मृ.	१	३	वृ.	१७	१४	व.	१३	४३	वि.	१	५	मि.	१३	२१	५/१६	६/५०
११	शु.	१४	१२	३३	आ.	०	५३	ध्रु.	१५	२२	श.	१२	२८	च.	०	६				५/१६	६/५०
१२	श.	३०	११	५२	पु.	१	११	व्या.	१३	५१	ना.	११	४४	कि.	२३	४३	कं.	१९	६	५/१६	६/५०

आषाढ़ शुक्ल पक्ष (१३ जुलाई से २७ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
१३	र.	१	११	४१	पु.	२	१	ह.	१२	४६	व.	११	४२	वा.	२३	४६				५/१७	६/४०
१४	सो.	२	१२	२	श्ले.	३	२२	व.	१२	५	कौ.	११	५६	तै.	०	११	सिं.	३	२२	५/१८	६/४०
१५	मं.	३	१२	५२	म.	५	८	सि.	११	४७	ग.	१२	२७	व.	१	४				५/१८	६/३९
१६	बु.	४	१४	११	पू.	सम्पूर्ण		व्य.	११	५१	वि.	१३	४२	व.	२	३१				५/१९	६/३९
१७	गु.	५	१५	५०	पू.	७	२०	व.	१२	१३	वा.	१५	२०	कौ.	४	१७	कं.	१३	५७	५/१९	६/३९
१८	शु.	६	१७	४६	उ.	६	४८	प.	१२	४७	तै.	१७	१५	ग.	सम्पूर्ण					५/२०	६/३८
१९	श.	७	१९	४८	ह.	१२	२५	शि.	१३	२८	ग.	६	१६	व.	१९	१७	तु.	१	४३	५/२०	६/३८
२०	र.	[illegible]	[illegible]	४६	चि.	१५	१	सि.	१४	७	वि.	८	१६	व.	२१	१५				५/२१	६/३८
२१	सो.	९	२३	२९	स्वा.	१७	२५	सा.	१४	३६	वा.	१०	७	कौ.	२३	०				५/२१	६/३८
२२	मं.	१०	०	५२	वि.	१९	३२	शु.	[illegible]	५२	तै.	११	[illegible]	ग.	१	२४	वृ.	१३	०	५/२२	६/३७
२३	बु.	११	१	४६	अनु.	२१	[illegible]	शु.	[illegible]	४७	व.	१२	५३	वि.	१	२२				५/२२	६/३७
२४	गु.	[illegible]	२	[illegible]	ज्ये.	[illegible]	[illegible]	ब्र.	[illegible]	२३	व.	१३	३७	वा.	१	५२	ध.	२२	२३	५/२३	६/३६
२५	शु.	[illegible]	२	[illegible]	मू.	२३	५	ऐ.	[illegible]	[illegible]	कौ.	१३	५२	तै.	१	५१				५/२४	६/३६
२६	श.	[illegible]	१	३२	पू.	२३	१७	वै.	[illegible]	१६	ग.	१३	३६	व.	१	२०	म.	५	१२	५/२४	६/३५
२७	र.	[illegible]	०	२८	उ.	२३	०	वि.	१०	३६	वि.	१२	५२	व.	०	२२				५/२४	६/३५

श्रावण कृष्ण पक्ष (२८ जुलाई से १० अगस्त तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	कं.	घं.	मि.	क.	घ.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२८	सो.	१	२३	०	श्र.	२२	२०	प्री.	८	३७	वा.	११	४१	कौ.	२२	५६				५/२५	६/३४
२९	मं.	२	२१	११	ध.	२१	१८	आ.	[illegible]	[illegible]	तै.	१०	७	ग.	२१	१५	कुं.	६	४९	५/२५	६/३३
३०	बु.	३	१९	६	श.	२०	०	शो.	०	५५	व.	८	१४	वि.	१९	१२				५/२६	६/३३
३१	गु.	४	१६	४८	पू.	१८	३०	ऽगं.	२१	५८	व.	६	५	वा.	[illegible]	[illegible]	मी.	१२	५३	५/२६	६/३२
१	शु.	५	१४	२३	उ.	१६	५३	सु.	१८	५७	तै.	१४	३१	ग.	१	१७				५/२७	६/३२
२	श.	६	११	५३	रे.	१५	११	धृ.	१५	५२	व.	१२	३	वि.	२२	४६	मे.	१५	११	५/२७	६/३१
३	र.	७	९	२७	अ.	१३	३३	शू.	१२	५१	व.	९	३६	वा.	२०	२६				५/२८	६/३०
४	सो.	८	[illegible]	[illegible]	भ.	१२	३	गं.	९	५६	कौ.	७	१६	तै.	[illegible]	[illegible]	वृ.	१७	४४	५/२८	६/३०
५	मं.	१०	३	४	कृ.	१०	४६	वृ.	[illegible]	[illegible]	व.	१५	५६	वि.	२	४५				५/२९	६/२९
६	बु.	११	१	३०	रो.	९	४४	व्या.	२	२१	व.	१४	९	वा.	१	३२	मि.	२१	२४	५/२९	६/२८
७	गु.	१२	०	२१	मृ.	९	४	ह.	०	२४	कौ.	१२	५६	तै.	०	१८				५/३०	६/२७
८	शु.	१३	२३	३८	आ.	८	४८	व.	२२	४९	ग.	११	५५	व.	२३	३१	क.	२	५७	५/३०	६/२७
९	श.	१४	२३	२६	पु.	९	१	सि.	२१	३१	वि.	११	२२	श.	२३	१३				५/३१	६/२६
१०	र.	३०	२३	४४	पु.	९	४२	व्य.	२०	५०	च.	११	२०	ना.	२३	२६				५/३१	६/२५

श्रावण शुक्ल पक्ष (११ अगस्त से २६ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
११	सो.	१	०	३५	श्ले.	१०	५५	व.	२०	२८	किं.	११	४८	व.	०	६	सिं.	१०	५५	५/३२	६/३४
१२	मं.	२	१	५१	म.	१२	३४	प.	२०	२५	वा.	१२	४६	कौ.	१	२२				५/३२	६/३४
१३	बु.	३	३	३०	पू.	१४	४०	शि.	२०	४२	तै.	१४	११	ग.	२	५८	कं.	२१	१६	५/३२	६/३३
१४	गु.	४	५	२६	उ.	१७	४	सि.	२१	१३	व.	१५	५५	वि.	४	५१				५/३३	६/३२
१५	शु.	५	सम्पूर्ण		ह.	१९	३७	सा.	२१	५२	व.	१७	५२	वा.	सम्पूर्ण					५/३३	६/३१
१६	श.	५	७	२६	चि.	२२	१६	शु.	२२	३०	वा.	६	५३	कौ.	१९	५२	तु.	८	५७	५/३३	६/३०
१७	र.	६	९	२८	स्वा.	०	४३	शु.	२३	२	तै.	८	५१	ग.	२१	४५				५/३४	६/२९
१८	सो.	७	११	१३	वि.	२	५३	ब्रं.	२३	२०	व.	१०	३९	व.	२३	२३	वृ.	२०	२०	५/३४	६/२८
१९	मं.	८	१२	३७	अनु.	४	३८	ऐं.	२३	१७	व.	१२	६	वा.	०	४३				५/३४	६/२७
२०	बु.	९	१३	३५	ज्ये.	सम्पूर्ण		वै.	२२	५५	कौ.	१३	२१	तै.	१	३७				५/३५	६/२६
२१	गु.	१०	१४	४	ज्ये.	५	५८	वि.	२२	७	ग.	१३	५४	व.	१	५५	ध.	५	५८	५/३५	६/२५
२२	शु.	११	१४	२	मू.	६	४७	प्री.	२०	५५	वि.	१३	५६	व.	१	४२				५/३६	६/२४
२३	श.	१२	१३	२९	पू.	७	४	आ.	१९	१९	वा.	१३	२९	कौ.	१	१	म.	१२	१	५/३६	६/२३
२४	र.	१३	१२	२८	उ.	६	५४	सौ.	१७	२३	तै.	१२	३३	ग.	२३	४६				५/३७	६/२३
२५	सो.	१४	११	२	श्र.	६/५	३६/२	शो.	१५	७	व.	११	०	वि.	२२	९	कुं.	१७	४९	५/३७	६/२२
२६	मं.	१५	९	१६	ध.	४	५	अ.	१२	३३	व.	९	१८	वा.	२०	१८				५/३७	६/२१

भाद्रपद कृष्ण पक्ष (२७ अगस्त से ९ सितम्बर तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२७	बु.	१	७/४	१३/५	पू.	२	३८	सु.	६	४७	कौ.	७	१९	तै.	१८/५	१२/५	मी.	२१	०	५/३८	६/२०
२८	गु.	३	२	३२	उ.	१	१	धृ.	६/३	५०/४६	व.	१५	५४	वि.	२	४३				५/३८	६/१९
२९	शु.	४	०	३	रे.	२३	१९	गं.	०	४१	व.	१३	३०	वा.	०	१९	मे.	२३	१९	५/३८	६/१८
३०	श.	५	२१	३८	अ.	२१	४१	वृ.	२१	३९	कौ.	११	४	तै.	२१	५०				५/३९	६/१७
३१	र.	६	१९	१८	भ.	२०	७	ध्रु.	१८	४०	ग.	८	४०	व.	१९	२८		१	४६	५/३९	६/१६
१	सो.	७	१७	६	कृ.	१८	४६	व्या.	१५	५०	वि.	६	२३	व.	१७/४	१७/२८	वृ.			५/४०	६/१५
२	मं.	८	१५	१६	रो.	१७	३९	ह.	१३	१३	कौ.	१५	२०	तै.	२	३०		५	१६	५/४०	६/१४
३	बु.	९	१३	४३	मृ.	१६	५४	व.	१०	५२	ग.	१३	४२	व.	१	४	मि.			५/४१	६/१३
४	गु.	१०	१२	३३	आ.	१६	३१	सि.	८	५०	वि.	१२	२६	व.	०	१०				५/४१	६/१२
५	शु.	११	११	५०	पु.	१६	३६	व्य.	७	८	वा.	११	५६	कौ.	२३	४६	क.	१०	३५	५/४२	६/११
६	श.	१२	११	३५	पु.	१७	१०	व.	५/४	४६/५४	तै.	११	३८	ग.	२३	४४				५/४२	६/१०
७	र.	१३	११	५४	श्ले.	१८	१५	शि.	४	२५	व.	११	५१	वि.	०	६	सिं.	१८	१५	५/४२	६/९
८	सो.	१४	१२	४४	म.	१९	४८	सि.	४	१६	श.	१२	२२	च.	०	५९				५/४३	६/८
९	मं.	३०	१४	१	पू.	२१	४८	सा.	४	२९	ना.	१३	३८	किं.	२	२७	कं.	४	२३	५/४४	६/७

भाद्रपद शुक्ल पक्ष (१० सितम्बर से २४ तक)

अं.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
१०	बु.	१	१५	४२	उ.	०	८	शु.	४	५५	व.	१५	१८	वा.	४	१६				५/४४	६/८
११	गु.	२	१७	३८	ह.	२	४१	शु.	५	३०	कौ.	१७	१५	तै.	सम्पूर्ण					५/४४	६/७
१२	शु.	३	१९	४३	चि.	५	१९	ब्रं.	सम्पूर्ण		तै.	६	१८	ग.	१९	२०	तु.	१६	०	५/४५	६/६
१३	श.	४	२१	४३	स्वा.	सम्पूर्ण		ब्रं.	६	९	व.	८	२२	वि.	२१	२२				५/४५	६/५
१४	र.	५	२३	३१	स्वा.	७	४८	ऐं.	६	३९	व.	१०	१८	वा.	२३	१२	वृ.	३	२८	५/४५	६/४
१५	सो.	६	०	५९	वि.	१०	३	वै.	६	५९	कौ.	११	५९	तै.	०	४४				५/४६	६/३
१६	मं.	७	१	५९	ऽनु.	११	५४	वि.	६	५९	ग.	१३	१६	व.	१	४८				५/४६	६/२
१७	बु.	८	२	३०	ज्ये.	१३	१९	प्री.	६	३९	वि.	१४	७	व.	२	२४	ध.	१३	१९	५/४६	६/१
१८	गु.	९	२	३१	मू.	१४	१५	आ.	५/४	५७/४६	वा.	१४	२७	कौ.	२	३०				५/४७	६/०
१९	शु.	१०	२	१	पू.	१४	३९	शो.	३	१७	तै.	१४	१८	ग.	२	५	म.	२०	३७	५/४७	५/५९
२०	श.	११	१	२	उ.	१४	३४	ऽगं.	१	२३	व.	१३	३९	वि.	१	१३				५/४७	५/५८
२१	र.	१२	२३	३८	श्र.	१४	३	सु.	२३	१०	व.	१२	३४	वा.	२३	५५	कुं.	१	३८	५/४८	५/५७
२२	सो.	१३	२१	५४	ध.	१३	१२	धृ.	२०	४०	कौ.	११	५	तै.	२२	१५				५/४८	५/५६
२३	मं.	१४	१९	५४	श.	१२	१	शू.	१७	५५	ग.	९	१७	व.	२०	१७	मी.	४	५७	५/४९	५/५५
२४	बु.	१५	१७	३९	पू.	१०	३५	गं.	१४	५९	वि.	७	१०	व.	१८/४	५५/४				५/४९	५/५४

आश्विन कृष्ण पक्ष (२५ सितम्बर से ९ अक्टूबर तक)

अं.ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू.उ.	सू.अ.
२५	गु.	१	१५	१८	उ.	९	०	वृ.	११	५७	कौ.	१५	४४	तै.	२	३०				५/५०	५/४९
२६	शु.	२	१२	५२	रे.	७/५	३०/४०	ध्रु.	८/८	५१/४५	ग.	१३	१७	व.	०	५	मे.	७	२०	५/५१	५/४८
२७	श.	३	१०	२७	अ.	४	५	ह.	२	४३	वि.	१०	५५	व.	२१	४६				५/५१	५/४७
२८	र.	४	८	९	कृ.	२	४०	व.	२३	४८	वा.	८	३७	कौ.	१९	३३	वृ.	९	४४	५/५१	५/४६
२९	सो.	५	९/४	१/६	रो.	१	२९	सि.	२१	५	तै.	६	२९	ग.	१७/१	३३/४५				५/५१	५/४५
३०	मं.	७	२	३७	मृ.	०	४०	व्य.	१८	४०	वि.	१५	४८	व.	३	०	मि.	१३	५	५/५२	५/४४
१	बु.	८	१	२८	आ.	०	११	व.	१६	३०	वा.	१४	२५	कौ.	१	४९				५/५२	५/४३
२	गु.	९	०	४६	पु.	०	८	प.	१४	४०	तै.	१३	२६	ग.	१	३	क.	१८	९	५/५२	५/४१
३	शु.	१०	०	३३	पु.	०	३५	शि.	१३	१४	व.	१२	५६	वि.	०	४८				५/५३	५/४०
४	श.	११	०	५१	श्ले.	१	३२	सि.	१२	११	व.	१२	५६	वा.	१	३	सिं.	१	३२	५/५३	५/३९
५	र.	१२	१	४२	म.	३	०	सा.	११	३४	कौ.	१३	२६	तै.	१	४९				५/५३	५/३८
६	सो.	१३	३	०	पू.	४	५४	शु.	११	१८	ग.	१४	२७	व.	३	४				५/५४	५/३७
७	मं.	१४	४	४२	उ.	सम्पूर्ण		शु.	११	२३	वि.	१५	५४	श.	४	४३	कं.	११	२८	५/५४	५/३६
८	बु.	३०	सम्पूर्ण		उ.	७	१०	ब्रं.	११	४५	च.	१७	४२	ना.	सम्पूर्ण					५/५५	५/३५
९	गु.	३०	६	४२	ह.	९	४१	ऐं.	१२	१५	ना.	६	४०	किं.	१९	४३	तु.	२२	५९	५/५५	५/३४

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (८ दिसम्बर से २१ तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
८	सो.	१	२०	४५	ज्ये.	११	२७	शू.	०	५१	किं.	८	२२	व.	२०	५५	ध.	११	२७	६/३४	५/२४
९	मं.	२	२१	२१	मू.	१२	४६	गं.	०	३	वा.	९	५०	कौ.	२१	३२				६/३४	५/२४
१०	बु.	३	२१	२५	पू.	१३	३३	वृ.	२२	५१	तै.	९	३३	ग.	२१	३८	म.	१९	३७	६/३५	५/२५
११	गु.	४	२०	५६	उ.	१३	५०	ध्रु.	२१	१५	व.	९	२६	वि.	२१	१३				६/३५	५/२५
१२	शु.	५	२०	३	श्र.	१३	३९	व्या	१९	१७	व.	८	४७	वा.	२०	२१	कुं.	१	२०	६/३६	५/२५
१३	श.	६	१८	४२	ध.	१३	१	ह.	१६	५९	कौ.	७	४२	तै.	१/६	३/४				६/३६	५/२६
१४	र.	७	१७	२	श.	१२	५	व.	१४	२५	व.	१४	२४	वि.	४	२६	मी.	५	९	६/३७	५/२६
१५	सो.	८	१५	५	पू.	१०	५०	सि.	११	३८	व.	१५	२८	वा.	२	२२				६/३८	५/२६
१६	मं.	९	१२	५४	उ.	९	२२	व्य.	८/५	३/३ ७/१	कौ.	१३	१६	तै.	०	५				६/३८	५/२६
१७	बु.	१०	१०	३५	रे.	७/६	४/५	प.	२	२२	ग.	१०	५५	व.	२१	४४	मे.	७	४६	६/३९	५/२६
१८	गु.	११	८/५	१/५ ३/४	भ.	४	२७	शि.	२३	१३	वि.	८	३३	व.	१/६	२/१ ९/२				६/३९	५/२६
१९	शु.	१३	३	४२	कृ.	२	५६	सि.	२०	९	कौ.	१७	६	तै.	३	५९	वृ.	१०	५	६/४०	५/२७
२०	श.	१४	१	४२	रो.	१	३५	सा.	१७	१३	ग.	१४	५७	व.	१	५६				६/४१	५/२७
२१	र.	१५	२३	५६	मृ.	०	३०	शु.	१४	२७	वि.	१३	२	व.	०	८	मि.	१३	३	६/४१	५/२८

पौष कृष्ण पक्ष (२२ दिसम्बर से ६ जनवरी तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२२	सो.	१	२२	३२	आ.	२३	४७	शु.	११	५८	वा.	११	२४	कौ.	२२	३६				६/४२	५/३१
२३	मं.	२	२१	३१	पु.	२३	२६	ब्रं.	६	४७	तै.	१०	७	ग.	२१	३५	क.	१७	३२	६/४३	५/३१
२४	बु.	३	२०	५९	पु.	२३	३३	ऐं.	७/६	५५/२५	व.	६	१७	वि.	२०	५७				६/४४	५/३२
२५	गु.	४	२०	५६	श्ले	०	८	वि.	५	२०	व.	८	५६	वा.	२०	५४	सि.	०	८	६/४४	५/३३
२६	शु.	५	२१	२४	म.	१	१५	प्री.	४	३६	कौ.	६	६	तै.	२१	१७				६/४४	५/३३
२७	श.	६	२२	२३	पू.	२	४६	आ.	४	१८	ग.	६	४५	व.	२२	१३				६/४४	५/३४
२८	र.	७	२३	४६	उ.	४	५०	सौ.	४	२०	वि.	१०	५५	व.	२३	३७	कं.	६	१६	६/४४	५/३४
२९	सो.	८	१	३६	ह.	सम्पूर्ण		शो.	४	३६	वा.	१२	३१	कौ.	१	२५				६/४७	५/३५
३०	मं.	९	३	४४	ह.	७	१२	ऽगं.	५	७	तै.	१४	२७	ग.	३	२८	तु.	२०	२६	६/४८	५/३६
३१	बु.	१०	५	५४	चि.	६	४५	सु.	५	४०	व.	१६	३३	वि.	५	३८				६/४८	५/३६
१	गु.	११	सम्पूर्ण		स्वा.	१२	२४	धृ.	६	१०	व.	१८	४२	वा.	सम्पूर्ण					६/४६	५/३७
२	शु.	११	८	१	वि.	१४	५४	शू.	६	२८	वा.	७	४५	कौ.	२०	४१	वृ.	८	१७	६/४६	५/३७
३	श.	१२	९	५२	ऽनु:	१७	८	गं.	६	३१	तै.	९	३७	ग.	२२	२३				६/४६	५/३८
४	र.	१३	११	२३	ज्ये.	१९	१	वृ.	६	१३	व	११	८	वि.	२३	४०	ध.	१९	१	६/४७	५/३९
५	सो.	१४	१२	२५	मू.	२०	६	ध्रु.	५	३४	श.	१२	१२	च.	०	३७				६/४७	५/३९
६	मं.	३०	१२	५८	पू.	२१	२१	व्या.	४	३०	ना.	१३	१	कि.	१	३	म.	३	२७	६/४७	५/४०

पौष शुक्ल पक्ष (७ जनवरी से २० तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
७	बु.	१	१२	५६	उ.	२१	४५	ह.	३	२	व.	१३	५	व.	०	५१				६/४७	५/२५
८	गु.	२	१२	३०	श्र.	२१	४०	व.	१	११	कौ.	१२	३८	तै.	०	३				६/४७	५/२५
९	शु.	३	११	३२	ध.	२१	९	सि.	२२	५९	ग.	११	२९	व.	२२	४९	कुं.	९	२५	६/४७	५/२६
१०	श.	४	१०	११	श.	२०	१६	व्य.	२०	३२	वि.	१०	९	व.	२१	१९				६/४८	५/२७
११	र.	५	८/९	३८/२९	पू.	१६	७	व.	१७	४८	वा.	८	२९	कौ.	७९/६	२८/२९	मी.	१३	२५	६/४८	५/२९
१२	सो.	७	४	१८	उ.	१७	४२	प.	१४	५१	ग.	१७	२७	व.	४	२२				६/४८	५/२९
१३	मं.	८	१	५९	रे.	१६	६	शि.	११	४६	वि.	१५	१२	व.	२	३	मे.	१६	६	६/४८	५/३०
१४	बु.	९	२३	३१	अ.	१४	२६	सि.	८/५	३८/२८	वा.	१२	५२	कौ.	२३	४१				६/४८	५/३१
१५	गु.	१०	२१	१८	भ.	१२	४७	शु.	२	२०	तै.	१०	३०	ग.	२१	२०	वृ.	१८	२४	६/४८	५/३२
१६	शु.	११	१९	७	कृ.	११	१३	शु.	२३	२०	व.	८	१३	वि.	१९/६	६/४				६/४८	५/३२
१७	श.	१२	१७	७	रो.	९	४९	ब्रं.	२०	३०	वा.	१७	२	कौ.	४	९	मि.	२१	१४	६/४८	५/३३
१८	र.	१३	१५	२३	मृ.	८	४०	ऐं.	१७	५६	तै.	१५	१४	ग.	२	३१				६/४८	५/३४
१९	सो.	१४	१४	१	आ.	७	५२	वै.	१५	३७	व.	१३	४७	वि.	१	१५	क.	१	३१	६/४८	५/३५
२०	मं.	१५	१३	२	पु.	७	२४	वि.	१३	३९	ब.	१२	४४	वा.	०	२७				६/४८	५/३५

माघ कृष्ण पक्ष (२१ जनवरी से ४ फरवरी तक)

अं. ता.	वा.	ति.	घं.	मि.	न.	घं.	मि.	यो.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	क.	घं.	मि.	चं.	घं.	मि.	सू. उ.	सू. अ.
२१	बु.	१	१२	३१	पु.	७	२३	प्री.	१२	१	कौ	१२	९	तै.	०	७				६/४७	५/३५
२२	गु.	२	१२	३१	श्ले.	७	५०	आ.	१०	४८	ग.	१२	५	व.	०	२०	सिं.	७	५०	६/४७	५/३६
२३	शु.	३	१३	२	म.	८	५०	सौ.	९	५८	वि.	१२	३४	व.	१	५				६/४६	५/३७
२४	श.	४	१४	४	पू.	१०	१९	शो.	९	३३	वा.	१३	३५	कौ.	२	३०	कं.	१६	४८	६/४६	५/३७
२५	र.	५	१५	३२	उ.	१२	१४	ऽगं.	९	२८	तै.	१५	२५	ग.	४	१०				६/४६	५/३८
२६	सो.	६	१७	२३	ह.	१४	२८	सु.	९	४२	व.	१६	५५	वि.	६	४	तु.	३	४५	६/४६	५/३९
२७	मं.	७	१९	२९	चि.	१७	३	धृ.	१०	८	व.	१९	०	वा.	सम्पूर्ण					६/४६	५/३९
२८	बु.	८	२१	४०	स्वा.	१९	४१	शू.	१०	४१	वा.	८	६	कौ.	२१	१२				६/४६	५/४०
२९	गु.	९	२३	४५	वि.	२२	१४	गं.	११	१३	तै.	१०	१४	ग.	२३	१७	वृ.	१५	३६	६/४६	५/४०
३०	शु.	१०	१	३४	ऽनु.	०	३१	वृ.	११	३५	व.	१२	१२	वि.	१	८				६/४५	५/४१
३१	श.	११	३	१	ज्ये.	२	२९	ध्रु.	११	४५	व.	१३	४०	वा.	२	१२	ध.	२	२९	६/४५	५/४१
१	र.	१२	४	०	मू.	४	०	व्या.	११	३४	कौ.	१४	५५	तै.	३	३८				६/४४	५/४२
२	सो.	१३	४	२९	पू.	५	२	ह.	११	४	ग.	१५	५३	व.	४	९				६/४४	५/४२
३	मं.	१४	४	२५	उ.	५	३१	व.	१०	७	वि.	१६	८	श.	४	९	म.	११	९	६/४३	५/४२
४	बु.	३०	३	५२	श्र.	५	३३	सि.	८	४७	च.	१५	४२	वा.	३	४०				६/४२	५/४३

फोन { दुकान ६२८८६
निवास ६४८५६
मिल ६४०५६ }

नव वर्ष के उपलक्ष में आपका हार्दिक अभिनन्दन

मेसी मिल्स

निर्माणकर्ता :—

जारजेट, स्कर्ट, चुनरी, मेसी काटन साड़ियाँ

★

मेहरा सिल्क मिल्स

एस. १५/६, घौसाबाद

नदेसर, वाराणसी

विक्रेता—मेसी साड़ीज

आर. के. इण्डस्ट्रीज

सी. के. ५८/५५ नार्थ चौक

वाराणसी

पंचांग एवं सारिणी देखने की विधि

तिथ्यादि सारिणी सं० २०३७, सन् १९८०-८१ ई०

सारिणी देखने की सुविधा हेतु प्रथम पंक्ति में अंग्रेजी तारीख हिन्दी अंकों में दी गई है, बाद की पंक्ति में वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्र-राशि एवं सूर्य उदय-अस्त की पंक्तियों में समय क्रमशः घण्टा-मिनट में दिये गये हैं, करण भी घण्टा-मिनट में है। ता० से तारीख, वा० से वार, ति० से तिथि, न० से नक्षत्र, यो० से योग, क० से करण, चं०रा० से चन्द्र-राशि, सू० उ० से सूर्योदय, सू० अ० से सूर्यास्त, घं० से घण्टा, मि० से मिनट समझना चाहिए। तिथि, नक्षत्र एवं करण का अंकित समय समाप्ति का है तथा चन्द्र-राशि का समय प्रारम्भ का है।

इस सारिणी में घण्टा-मिनट रेलवे घड़ी की संख्यानुसार हैं जैसे—दिन के बारह बजे तक की संख्या ज्यों-की-त्यों है। १२ बजे दिन के बाद १ बजे के स्थान पर १३, २ बजे के स्थान पर १४, १२ बजे रात्रि की जगह पर (शून्य) है। इसके बाद रात्रि १ बजे से घं० १, २, ३, इसी प्रकार क्रमशः हैं। साधारण जनता की सुविधा के लिए सूर्य-उदय एवं सूर्य-अस्त का समय सीधा ही दिया गया है। रेलवे घड़ी की संख्यानुसार नहीं दिया गया है। सूर्योदय से पूर्व १ मिनट का भी कम समय हो, तो उसे पहले दिन का समय ही समझना चाहिए। दूसरे दिन सूर्योदय से ही वार एवं तिथि बदली गई है। जो तिथि या नक्षत्र सूर्योदय में नहीं हैं, $\frac{७}{४}$ $\frac{४}{६६}$- के रूप में हैं। बटे में नीचे जो अंक हैं, वह आगे की तिथि और नक्षत्र का समझना चाहिये।

दिक्शूल

सोम शनी पूरब नहिं चालू, मंगल बुध उत्तर दिशि कालू।
वीफै को नहीं दक्खिन जाये, रवि शुक्र पश्चिम ना धाये॥
बुद्ध कहे मैं बड़ा सयाना, मोरे दिन मत करो पयाना।
कौड़ी से नहीं भेंट कराऊँ, क्षेम कुशल से घर पहुँचाऊँ॥

॥ चन्द्रवास ॥

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धन	मकर	कुम्भ	मीन

॥ चन्द्रवास फल ॥

यात्रा में सन्मुख चन्द्रमा हों, तो अर्थ [धन] की प्राप्ति कराते हैं। दक्षिण [दाहिने] चन्द्रमा हों, तो सुख एवं सम्पदा की प्राप्ति कराते हैं। पृष्ठ में [पीठ पीछे] चन्द्रमा हों, तो मरणतुल्य कष्ट होता है। वाम [बायें] चन्द्रमा हों, तो धन की हानि कराते हैं।

॥ विशेष ॥

मृगशिरा, पुष्य, हस्त और अनुराधा—इन नक्षत्रों में दिक्शूल के दिन को छोड़कर अन्य दिन सब दिशाओं की यात्रा शुभ है।

संवत् २०३७ के नवीन आजीवन सदस्यों की नामावली

१. श्री लक्ष्मी नारायण टन्डन
सी०के० १२/३, ब्रह्मनाल, केडिया भवन, वाराणसी।

२. श्री ठाकुर प्रसाद कपूर
डी० ६४/२६ बी०, बैंक कालोनी, माधोपुर (सिगरा), वाराणसी।

३. आचार्य डा० दिनेश चन्द्र शर्मा
आर्य समाज, नाई की मण्डी, आगरा।

४. श्री मोहन लाल सहगल
मुकाम-आलमगंज, जौनपुर।

५. डा० कैलाश नाथ जैतली
बी० डी० एस०, डेण्टल सर्जन
गुड़ की मण्डी, आगरा।

६. श्री कृष्ण कुमार शर्मा
१७८, जमुना लाल वजाज स्ट्रीट,
कलकत्ता ७००००७।

७. श्री आर० ए० एस० शर्मा
क्वार्टर नं० २५८ ए, सेंट्रल गोटा नगर
गौहाटी ७८१०११, (आसाम)।

८. डा० एच० एम० झिंगरन
आसाम पेस्टीसाइड्स, आर० एग्रो केमिकल्स
जी० एन० बारडलोई रोड,
गौहाटी ७८१००३, (आसाम)।

९. डा० आर० एन० शर्मा
१७५ नामवारी, माली गाँव, गौहाटी
७८१०११, (आसाम)।

१०. डा० पी० एम० झिंगरन
१५९ गौशाला रोड, माली गाँव, गौहाटी
७८१०११ (आसाम)।

११. श्री विजय कपूर
द्वारा पी० सी० वर्मा, जे० ९७, पटेल नगर,
गाजियाबाद।

१२. श्रीमती जयश्री कोहली
द्वारा श्री के० एस० कोहली,
४७७/१६ बी०, खार, बम्बई ५२।

१३. डा० लाडली प्रसाद टण्डन
यल० यस० यम० एफ०, डी० टी० एन०,
मंजरी भवन, माईथान, आगरा २८२००३।

१४. श्री दाऊदयाल खन्ना
६३-ए, कैलाश वोस स्ट्रीट, कलकत्ता-६।

१५. श्री किशन चंद टण्टन
नं० २ नेताई हालदार स्ट्रीट, कलकत्ता–७।

१६. श्री मोहन लाल सहगल
स्टेट रानी धनदेई, जौनपुर।

१७. श्री रमेश चन्द्र सरीन
बी/१७५, जनकपुरी, नई दिल्ली।

१८. श्री राधे कृष्ण मेहरोत्रा
डी० ६/११, रानी भवानी गली, वाराणसी।

१९. श्री गंगा चरन वर्मन
राजाधिराज बाजार, मथुरा।

२०. श्री कन्हैया लाल वर्मन
१३५, राज महल एक्सटेंसन, बंगलोर।

२१. श्री प्रताप नारायण सेठ
एकांउट्स आफिसर, जन्डल टाकीज प्रा० लि०,
भागीरथ पैलेस, दिल्ली।

२२. श्री आनन्द स्वरूप कपूर
यम० ४/५१, शास्त्रीनगर, वाराणसी।

२३. श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा
रविनगर (थाने के पीछे), मोगलसराय, वाराणसी।

२४. श्री अशोक शर्मा
१८६ सुभाष पार्क एक्सटेंसन, नवीन शाहदरा,
दिल्ली–३२।

२५. श्रीमती हरमोहन लाल
पी १०, तिलक मार्ग, सी० स्कीम, जयपुर,
राजस्थान ।

२६. श्रीमती सरस्वती देवी
ध०प० श्री श्याम किशोर कपूर, महतपुरा; मथुरा।

२७. श्रीमती सरला देवी
ध० प० श्री के०के० शर्मा, राम भवन, मदार गेट,
अलीगढ़–उ० प्र० ।

२८. श्री लक्ष्मी नारायण मेहरोत्रा
देवकाली रोड, फैजाबाद, उ० प्र० ।

२६. श्री अरुण कुमार टण्डन
बी २/४, नेवियर रोड कालोनी,
निवाज़गंज, लखनऊ २२६००३ ।

३०. श्री विजय कुमार मेहरोत्रा
द्वारा–डा० जी० एल० बनर्जी,
विवेक नगर, बी० टी० रोड, टीटागढ़, २४ परगना,
पश्चिम बंगाल ।

३१. आर० महादेव लाल एण्ड कम्पनी
१४/१८, बिठोवा लेन, बिट्ठल वाड़ी,
बम्बई–४००००२ ।

३२. श्री मगन स्वरूप त्रिवखा
एम० ए०, एल-एल०-बी०, एल० टी०,
उपविद्यालय निरीक्षक,
माईथान चौराहा, आगरा–३ ।

३३. श्री रामेश्वर नाथ जैंतली
पर्यवेक्षक दूरभाष,
१४/२३५, गुड़ की मण्डी, आगरा ।

३४. श्री रतन प्रसाद अग्रवाल;
एडवोकेट
स्टेशन रोड, गोंडा ।

३५. श्रीमती सावित्री देवी अग्रवाल
द्वारा–अन्नपूर्णा वस्त्रालय, मालवीय रोड, देवरिया ।

३६ श्री नरेन्द्र कुमार कपूर
एस० १४३, पंचशील पार्क, नई दिल्ली ११००१७ ।

३७. श्री सुरेन्द्र कपूर
जनरल एजेन्सीज, अंगूरी बाग, फैजाबाद ।

३८. श्री भागवत नारायण शर्मा
अग्रवाल नगर, बिल्डिंग नं० ६, ब्लाक नं० ४,
माटुंगा, बम्बई–१६ ।

३६. श्री रामनारायण मेहरा
२/६ अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली–११०००२ ।

४०. पं० अमरनाथ शर्मा
६/७ जैतपुरा, वाराणसी ।

४१. श्री गोविन्द प्रसाद अग्रवाल
बीरगंज (नेपाल) ।

४२. श्री जवाहर चन्द बहल
महात्मा गाँधी मार्ग, (दि माल)
लखनऊ

॥ श्री हरिः ॥

बिना सभा की अनुमति के तिथि-पर्व-निर्णय पत्रिका की प्रतिलिपि न करें।

तिथि-पर्व-निर्णय, संवत् २०३७, शाके १९०२,

ईसवीय सन् १९८०-८१

॥ वर्षे हर्ष प्रकर्ष स्यात् ॥

[श्री सूर्य उत्तरायण] (चैत्र शुक्ल पक्ष, ता० १७ मार्च से ३१ मार्च तक) (वसंत ऋतु)

[राष्ट्रीय ता० २७ फाल्गुन से ११ चैत्र तक]

प्रतिपदा	सोमवार	१७ मार्च	श्री मुख नाम संवत्सर, नववर्षारम्भ, वसंत, नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापन प्रातः से तथा पंचांग दान एवं वार्षिक फल सुनना तथा उत्तरा भाद्रपदा के सूर्य दिन में २-२ पर।
द्वितीया	मंगलवार	१८ मार्च	पंचक समाप्ति रात्रि १०.५ पर तथा चन्द्र दर्शन।
तृतीया	बुधवार	१९ मार्च	गण गौर तीज, गौरीपूजन।
सप्तमी	रविवार	२३ मार्च	नवरात्र की सप्तमी का व्रत, तथा अन्नपूर्णाजी की फेरी दिन में ११-१३ के बाद, एवं भानु सप्तमी पर्व सूर्य ग्रहण के समान स्नान का विशेष फल।
अष्टमी	सोमवार	२४ मार्च	अष्टमी पूजन, जोत जगाना अष्टमी वालों के लिये तथा अन्नपूर्णाजी की फेरी, दिन में १०-४० तक तथा श्री रामनवमी व्रत स्मार्तों के लिये।
नवमी	मंगलवार	२५ मार्च	नवमी पूजन, जोत जगाना नवमी वालों के लिये, तथा देवी विसर्जन अष्टमी वालों के लिये, एवं श्री रामनवमी व्रत वैष्णवों के लिये तथा नवरात्र समाप्ति।
दशमी	बुधवार	२६ मार्च	देवी विसर्जन नवमी वालों के लिये तथा नवरात्र समाप्ति।
एकादशी	गुरुवार	२७ मार्च	श्री कामदा एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	शुक्रवार	२८ मार्च	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	रविवार	३० मार्च	श्री हाटकेश्वर जयंती तथा रेवती के सूर्य रात्रि १२-४५।
पूर्णिमा	सोमवार	३१ मार्च	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की, तथा वैशाख स्नान-दान-नियमादि प्रारंभ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (वैशाख कृष्ण पक्ष, ता० १ अप्रैल से १५ अप्रैल तक) (वसंत ऋतु)

[राष्ट्रीय ता० १२ चैत्र से २६ चैत्र तक]

चतुर्थी	शुक्रवार	४ अप्रैल	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि, ९-३२।
सप्तमी	सोमवार	७ अप्रैल	श्री शीतला अष्टमी का वासी बनाना।
अष्टमी	मंगलवार	८ अप्रैल	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना)।
दशमी	गुरुवार	१० अप्रैल	पंचक प्रारम्भ, रात्रि १-११ से।
एकादशी	शुक्रवार	११ अप्रैल	वरूथिनी एकादशी व्रत, सबके लिये।
द्वादशी	शनिवार	१२ अप्रैल	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र की कामना वालों के लिए व्रत का आरम्भ।
त्रयोदशी	रविवार	१३ अप्रैल	श्री मांस शिवरात्रि व्रत तथा अश्विनी के सूर्य एवं मेष की संक्रांति (सतुआ संक्रान्ति) मध्याह्न में २-१३ पर तथा पुण्य काल प्रातः १०-१३ से सूर्यास्त तक, हरिद्वार एवं काशी में अस्सी संगम पर स्नान का विशेष फल तथा दादी समाद का पूड़ा।
अमावश	मंगलवार	१५ अप्रैल	पंचक समाप्ति प्रातः ६-५ पर।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (वैशाख शुक्ल पक्ष; ता० १६ अप्रैल से ३० अप्रैल तक) (वसंत ऋतु)

[राष्ट्रीय ता० २७ चैत्र से १० वैशाख तक]

प्रतिपदा	बुधवार	१६ अप्रैल	चन्द्र दर्शन।
तृतीया	गुरुवार	१७ अप्रैल	अक्षय तृतीया सत्तू-घटादि दान।
सप्तमी	सोमवार	२१ अप्रैल	श्री गंगा सप्तमी।
एकादशी	शुक्रवार	२५ अप्रैल	मोहिनी एकादशी व्रत, स्मार्तों के लिए।
द्वादशी	शनिवार	२६ अप्रैल	मोहिनी एकादशी व्रत, वैष्णवों के लिये।
द्वादशी	रविवार	२७ अप्रैल	पक्ष प्रदोष व्रत, एवं भरणी के सूर्य प्रातः ६-३०।
त्रयोदशी	सोमवार	२८ अप्रैल	श्री नृसिंह चतुर्दशी व्रत, नृसिंह जयंती।
चतुर्दशी	मंगलवार	२९ अप्रैल	पूर्णिमा व्रत की प्रातः १०-२६ से।
पूर्णिमा	बुधवार	३० अप्रैल	पूर्णिमा स्नान-दान की मध्याह्न १२-८ तक, तथा वैशाख स्नान-दान-नियमादि समाप्ति तथा उज्जैन में कुंभ महापर्व।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, ता० १ मई से १४ मई तक) [राष्ट्रीय ता० ११ वैशाख से २४ वैशाख तक] { वसंत ऋतु ता० १४ मई मध्याह्न से ग्रीष्म ऋतु }

तृतीया	शनिवार	३ मई	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय, रात्रि, ९-१७।
सप्तमी	बुधवार	७ मई	श्री शीतला अष्टमी का बासी बनाना।

अष्टमी	गुरुवार	८ मई	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना) तथा पंचक प्रारंभ प्रातः ९-११ से।
एकादशी	शनिवार	१० मई	अपरा एकादशी व्रत, स्मार्तों के लिये, तथा श्री भद्रकाली एकादशी, भद्रकाली का महोछा, एवं कृत्तिका के सूर्य रात्रि १-२३ पर।
द्वादशी	रविवार	११ मई	अपरा एकादशी व्रत, वैष्णवों के लिये।
त्रयोदशी	सोमवार	१२ मई	सोम पक्ष प्रदोष व्रत, धन-पुत्र की कामना वालों के लिये व्रतारम्भ, तथा पंचक समाप्ति दिन में २-१२ तथा श्री मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	बुधवार	१४ मई	वट सावित्री व्रत (पकौड़ों की अमावस) तथा वृष की संक्रान्ति दिन में १२-३१ पर।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, ता० १५ मई से २९ मई तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २५ वैशाख से ८ ज्येष्ठ तक]

प्रतिपदा	गुरुवार	१५ मई	श्री चन्द्र दर्शन, तथा श्री पुरुषोत्तम मास प्रारंभ, पुरुषोत्तम मास निमित्तिक स्नान-दान-व्रतादि कार्य प्रारंभ।
दशमी	शनिवार	२४ मई	श्री गंगा दशहरा, तथा रोहिणी के सूर्य रात्रि १०-४८।
एकादशी	रविवार	२५ मई	श्री पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबके लिये।
त्रयोदशी	मंगलवार	२७ मई	भौम पक्ष प्रदोष व्रत, ऋण निवारण के लिये व्रतारंभ।
पूर्णिमा	गुरुवार	२९ मई	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, ता० ३० मई से १२ जून तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ९ ज्येष्ठ से २२ ज्येष्ठ तक]

चतुर्थी	सोमवार	२ जून	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि ९-५२।
षष्ठी	बुधवार	४ जून	पंचक प्रारंभ सायं ५-२५ से।
नवमी	शनिवार	७ जून	मृगशिरा के सूर्य रात्रि १०-१६-से।
दशमी	रविवार	८ जून	पंचक समाप्ति रात्रि १०-३१ पर।
एकादशी	सोमवार	९ जून	श्री पुरुषोत्तमी एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	मंगलवार	१० जून	भौम पक्ष प्रदोष व्रत, ऋण निवारण के लिये व्रतारंभ, तथा शुक्र तारा प्रातः ९-३३ पर पश्चिम में अस्त होगा।
त्रयोदशी	बुधवार	११ जून	श्री मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	शुक्रवार	१२ जून	पुरुषोत्तम मास समाप्ति, पुरुषोत्तम मास निमित्तिक स्नान-दान-व्रतादि समाप्ति।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, ता० १३ जून से २८ जून तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २३ ज्येष्ठ से ७ आषाढ़ तक]

द्वितीया	शनिवार	१४ जून	श्री चन्द्र दर्शन, तथा मिथुन की संक्रांति रात्रि १०-३५।
अष्टमी	शुक्रवार	२० जून	शुक्र तारा प्रातः ७-३२ पर पूर्व में उदय होगा।
अष्टमी	शनिवार	२१ जून	आर्द्रा के सूर्य रात्रि ११-१२ पर।
एकादशी	मंगलवार	२४ जून	निर्जला एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	बुधवार	२५ जून	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	शुक्रवार	२७ जून	पूर्णिमा व्रत की दिन में २-३६ से।
पूर्णिमा	शनिवार	२८ जून	पूर्णिमा स्नान-दान की, दिन में २-२८ तक, तथा वट सावित्री व्रत।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (आषाढ़ कृष्ण पक्ष, ता० २९ जून से १२ जुलाई तक) [ग्रीष्म ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ८ आषाढ़ से २१ आषाढ़ तक]

तृतीया	मंगलवार	१ जुलाई	पंचक प्रारंभ रात्रि १-३६ से, तथा श्री अंगारकी संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि ९-२७।
सप्तमी	शुक्रवार	४ जुलाई	श्री शीतला अष्टमी का बासी बनाना।
अष्टमी	शनिवार	५ जुलाई	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना) तथा पुनर्वसु के सूर्य रात्रि १२-५३ पर।
नवमी	रविवार	६ जुलाई	पंचक समाप्ति प्रातः ६-५२ पर।
एकादशी	मंगलवार	८ जुलाई	योगिनी एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	बुधवार	९ जुलाई	पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	गुरुवार	१० जुलाई	श्री मास शिवरात्रि व्रत।

[श्री सूर्य उत्तरायण ता० १६ से दक्षिणायन] (आषाढ़ शुक्ल पक्ष, ता० १३ जुलाई से २७ जुलाई तक) [ग्रीष्म ऋतु ता० १६ से वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २२ आषाढ़ से ५ श्रावण तक]

प्रतिपदा	रविवार	१३ जुलाई	श्री चन्द्र दर्शन।
द्वितीया	सोमवार	१४ जुलाई	श्री रथयात्रा।
चतुर्थी	बुधवार	१६ जुलाई	कर्क की संक्राति दिन में २-५ पर, तथा सूर्य दक्षिणायन एवं वर्षा ऋतु प्रारंभ, दैत्यों का दिन तथा देवताओं की रात्रि।
सप्तमी	शनिवार	१९ जुलाई	पुष्य के सूर्य रात्रि २-२२ पर।

एकादशी	बुधवार	२३ जुलाई	विष्णुशयनी एकादशी व्रत, सबके लिये, तथा चातुर्मास व्रत, स्नान, दान-नियम प्रारंभ।
त्रयोदशी	शुक्रवार	२५ जुलाई	पक्ष प्रदोष व्रत।
पूर्णिमा	रविवार	२७ जुलाई	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की, तथा गुरु पूर्णिमा, गुरु एवं व्यास पूजन।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (श्रावण कृष्ण पक्ष, ता० २८ जुलाई से १० अगस्त तक) [वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ६ श्रावण से १९ श्रावण तक]

प्रतिपदा	सोमवार	२८ जुलाई	श्री श्रावण सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
द्वितीया	मंगलवार	२९ जुलाई	पंचक प्रारंभ प्रातः ९-४९।
तृतीया	बुधवार	३० जुलाई	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि ८-५३।
षष्ठी	शनिवार	२ अगस्त	पंचक समाप्ति दिन में ३-११ तथा आश्लेषा के सूर्य रात्रि २-४७ पर।
सप्तमी	रविवार	३ अगस्त	श्री भानु सप्तमी पर्व, सूर्य ग्रहण के समान स्नान-दान का फल।
अष्टमी	सोमवार	४ अगस्त	श्री श्रावण सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
दशमी	मंगलवार	५ अगस्त	श्री बाबा लालू जसरायजी का महोछा।
एकादशी	बुधवार	६ अगस्त	कामदा एकादशी व्रत सबके लिए।
त्रयोदशी	शुक्रवार	८ अगस्त	पक्ष प्रदोष व्रत, तथा श्री मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	रविवार	१० अगस्त	हरियाली अमावस।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (श्रावण शुक्ल पक्ष, ता० ११ अगस्त से २६ अगस्त तक) [वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २० श्रावण से ४ भाद्रपद तक]

प्रतिपदा	सोमवार	११ अगस्त	श्री श्रावण सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
द्वितीया	मंगलवार	१२ अगस्त	श्री चन्द्र दर्शन।
तृतीया	बुधवार	१३ अगस्त	ठकुरानी तीज।
पंचमी	शुक्रवार	१५ अगस्त	श्री नाग पंचमी (नाग पचैयाँ) तथा ऋग्वैदियों की श्रावणी, उपाकर्म)।

पंचमी	शनिवार	१६ अगस्त	मघा के सूर्य एवं सिंह की संक्रान्ति रात्रि १-३१ पर तथा मघा-सिंघा प्रारम्भ रात्रि १-३१ से।
सप्तमी	सोमवार	१८ अगस्त	श्री श्रावण सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन, एवं रुद्राभिषेक करना तथा महात्मा गोस्वामी तुलसीदास की जयन्ती।
अष्टमी	मंगलवार	१९ अगस्त	श्री विंध्याचल माता की अष्टमी, जोत जगाना एवं पूजन करना।
एकादशी	शुक्रवार	२२ अगस्त	पुत्रदा एकादशी व्रत सबके लिए, तथा विष्णुजी पर पवित्रा चढ़ाना।
द्वादशी	शनिवार	२३ अगस्त	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र की कामना वालों के लिए व्रत का आरंभ।
त्रयोदशी	सोमवार	२४ अगस्त	श्री मूलो माताजी का महोछा।
चतुर्दशी	सोमवार	२५ अगस्त	पूर्णिमा व्रत की दिन में ११-२ से तथा पंचक प्रारम्भ सायं ५-४१ पर एवं श्री चण्डिकाजी का महोछा, तथा सोम प्रदोष व्रत, सायंकाल में शिवजी का पूजन एवं रुद्राभिषेक करना।
पूर्णिमा	मंगलवार	२६ अगस्त	पूर्णिमा स्नान-दान की प्रातः ९-१६ तक, तथा यजुर्वेदियों की श्रावणी, (उपाकर्म) एवं रक्षाबन्धन, (रखड़ी) प्रातः से।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (भाद्रपद कृष्ण पक्ष, ता० २७ अगस्त से ९ सितम्बर तक) [वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ५ भाद्रपद से १८ भाद्रपद तक]

तृतीया	गुरुवार	२८ अगस्त	गुरु तारा दिन में १२-१ पर पश्चिम में अस्त होगा, तथा कज्जली, तीज (कजरी, तीज)।
चतुर्थी	शुक्रवार	२९ अगस्त	बहुला संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ८-५८ तथा पंचक समाप्ति रात्रि ११-१९ पर।
पंचमी	शनिवार	३० अगस्त	पूर्वा फाल्गुनी के सूर्य रात्रि ९-५५, तथा माई-मिन्ना।
षष्ठी	रविवार	३१ अगस्त	ललही छठ (हल षष्ठी) तथा ठंडरी का बासी बनाना।
सप्तमी	सोमवार	१ सितंबर	ठंडरी पूजन (बासी खाना) एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत, स्मार्तों के लिए।
अष्टमी	मंगलवार	२ सितंबर	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों के लिए तथा जडी पूजन जेतली सारस्वत एवं मेहरे खत्रियों में प्रचलित।
नवमी	बुधवार	३ सितंबर	दधिकाँदो।
एकादशी	शुक्रवार	५ सितंबर	जया एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	शनिवार	६ सितंबर	गौंवच्छा (गाय-बछड़े का पूजन) तथा शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र की कामना वालों के लिये व्रतारम्भ।
त्रयोदशी	रविवार	७ सितंबर	श्री मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	मंगलवार	९ सितम्बर	कुशोत्पाटिनी अमावस, कुशा लाना।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (भाद्रपद शुक्ल पक्ष, ता० १० सितम्बर से २४ सितम्बर तक) [वर्षा ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १६ भाद्रपद से २ आश्विन तक] [ता० १६ शरद ऋतु]

प्रतिपदा	बुधवार	१० सितंबर	श्री चन्द्र दर्शन ।
द्वितीया	गुरुवार	११ सितंबर	तीज की सर्घी, तथा सामवेदियों की श्रावणी (उपाकर्म) ।
तृतीया	शुक्रवार	१२ सितंबर	हरतालिका तृतीया (बड़ी तीज) तथा शिवा माताजी का महोछा ।
चतुर्थी	शनिवार	१३ सितंबर	ढेला चौथ, (चन्द्र दर्शन निषेध), चंद्रास्त रात्रि ८–३५ तथा उत्तरा फाल्गुनी के सूर्य, दिन में ३–४६ पर ।
पंचमी	रविवार	१४ सितम्बर	ऋषि पंचमी व्रत (ऋषि पूजन) ।
षष्ठी	सोमवार	१५ सितम्बर	लोलारक छठ, काशी में लोलारक कुण्ड में स्नान एवं सूर्य-पूजन-दर्शन ।
सप्तमी	मंगलवार	१६ सितम्बर	श्री महालक्ष्मी का धागा बांधना सप्तमी वालों के लिये एवं महालक्ष्मी व्रतारंभ, तथा कन्या की संक्रान्ति रात्रि १–४९ पर ।
अष्टमी	बुधवार	१७ सितम्बर	श्री महालक्ष्मी का धागा बाँधना अष्टमी वालों के लिये, एवं महालक्ष्मी व्रतारंभ, तथा बुधाष्टमी पर्व मूंग का भोजन एवं मूंग के दान का तथा स्नान का विशेष फल, एवं विश्वकर्मा पूजा तथा शरद् ऋतु प्रारम्भ ।
एकादशी	शनिवार	२० सितम्बर	पद्मा एकादशी व्रत सब के लिये ।
द्वादशी	रविवार	२१ सितम्बर	पंचक प्रारम्भ रात्रि १–३८ तथा वामन द्वादशी व्रत एवं कन्या राशि के गुरु रात्रि २–२३ पर होंगे ।
त्रयोदशी	सोमवार	२२ सितम्बर	सोम पक्ष प्रदोष व्रत, धन एवं पुत्र की कामना वालों के लिए व्रतारंभ ।
चतुर्दशी	मंगलवार	२३ सितम्बर	अनन्त चतुर्दशी व्रत (अनन्त पूजन)
पूर्णिमा	बुधवार	२४ सितम्बर	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की तथा महालय आरंभ, पूर्णिमा का श्राद्ध एवं अथर्ववेदियों की श्रावणी (उपाकर्म) ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (आश्विन कृष्ण पक्ष, ता० २५ सितम्बर से ९ अक्टूबर तक) [शरद ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ३ आश्विन से १७ आश्विन तक]

प्रतिपदा	गुरुवार	२५ सितम्बर	प्रतिपदा का श्राद्ध, तथा गुरु तारा सायं ५–१२ पर पूर्व में उदय होगा ।
द्वितीया	शुक्रवार	२६ सितम्बर	द्वितीया का श्राद्ध एवं १२–५२ के बाद तृतीया का श्राद्ध एवं पंचक समाप्ति प्रातः ७–२० पर ।
तृतीया	शनिवार	२७ सितम्बर	चतुर्थी का श्राद्ध एवं १०–२७ के भीतर तृतीया का श्राद्ध भी हो सकता है, तथा श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंदोदय रात्रि ८–२२ पर तथा भरणी का श्राद्ध ।

चतुर्थी	रविवार	२८ सितम्बर	पंचमी का श्राद्ध ।
पंचमी	सोमवार	२९ सितम्बर	षष्ठी (छठ) का श्राद्ध ।
सप्तमी	मंगलवार	३० सितम्बर	सप्तमी का श्राद्ध ।
अष्टमी	बुधवार	१ अक्टूबर	श्री महालक्ष्मी का धागा खोलना सप्तमी एवं अष्टमी वालों के लिये, तथा अष्टमी का श्राद्ध, एवं जीवित-पुत्रिका (जूतिया) का व्रत, जूतिया का मेला काशी में लक्ष्मी कुण्ड पर तथा बुधाष्टमी पर्व, मूंग का दान एवं भोजन का विशेष फल ।
नवमी	गुरुवार	२ अक्टूबर	नवमी का श्राद्ध, मातृ नवमी, सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध, जूतिया व्रत की पारणा प्रातः से, तथा श्री महालक्ष्मी दर्शन-पूजन ।
दशमी	शुक्रवार	३ अक्टूबर	दशमी का श्राद्ध ।
एकादशी	शनिवार	४ अक्टूबर	इन्दिरा एकादशी व्रत, सबके लिये तथा एकादशी का श्राद्ध ।
द्वादशी	रविवार	५ अक्टूबर	द्वादशी का श्राद्ध, तथा संन्यासी, यति, ब्रह्मचारी एवं वैष्णवों के श्राद्ध का दिन ।
त्रयोदशी	सोमवार	६ अक्टूबर	त्रयोदशी का श्राद्ध, तथा सोम पक्ष प्रदोष व्रत, धन एवं पुत्र की कामना करने वालों के लिए व्रत का आरंभ ।
चतुर्दशी	मंगलवार	७ अक्टूबर	चतुर्दशी का श्राद्ध, तथा अस्त्र-शस्त्र से मरे लोगों का श्राद्ध, एवं श्री मास शिवरात्रि व्रत ।
अमावस	बुधवार	८ अक्टूबर	अमावस का श्राद्ध, तथा जिनकी मृत तिथि न मालूम हो उनके श्राद्ध का दिन एवं पितृ-विसर्जन तथा महालय समाप्ति ।
अमावस	गुरुवार	९ अक्टूबर	नाना पड़वा । मातामह के श्राद्ध का दिन ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (आश्विन शुक्ल पक्ष, ता० १० अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक) [शरद ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १८ आश्विन से १ कार्तिक तक]

प्रतिपदा	शुक्रवार	१० अक्टूबर	शारदीय नवरात्र प्रारंभ, कलश-स्थापन अभिजित मुहूर्त में ११-२१ से १२-७ तक, तथा चित्रा के सूर्य रात्रि ७-१७ पर, एवं चन्द्र दर्शन ।
सप्तमी	गुरुवार	१६ अक्टूबर	नवरात्र की सप्तमी का व्रत, तथा अन्नपूर्णाजी की फेरी दिन में ३-५३ के बाद ।
अष्टमी	शुक्रवार	१७ अक्टूबर	अष्टमी पूजन, जोत जगाना, अष्टमी वालों के लिये, तथा अन्नपूर्णाजी की फेरी दिन में ३-२६ तक, एवं तुला की संक्रान्ति दिन में १२-२७ पर ।

नवमी	शनिवार	१८ अक्टूबर	नवमी पूजन, जोत जगाना नवमी वालों के लिये, तथा देवी-विसर्जन अष्टमी-नवमी वालों के लिये, विजया दशमी (दसहरा) ।
दशमी	रविवार	१९ अक्टूबर	पंचक प्रारम्भ प्रातः ६-३३ से, तथा पट्टाभिषेक राज-चिह्नादि पूजन, एवं राजाओं की दशमी ।
एकादशी	सोमवार	२० अक्टूबर	पापांकुशा एकादशी व्रत सबके लिये ।
द्वादशी	मंगलवार	२१ अक्टूबर	भौम पक्ष प्रदोष व्रत, ऋण-दोष-निवारण के लिये व्रत का आरम्भ ।
पूर्णिमा	गुरुवार	२३ अक्टूबर	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की प्रातः से, तथा शरद पूर्णिमा, एवं कार्तिक स्नान-दान-नियमादि प्रारंभ तथा पंचक समाप्ति दिन में ३-२८ पर, तथा स्वाती के सूर्य रात्रि ४-५७ पर ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (कार्तिक कृष्ण पक्ष, ता० २४ अक्टूबर से ७ नवम्बर तक) [शरद ऋतु]
[राष्ट्रीय ता० २ कार्तिक से १६ कार्तिक तक]

द्वितीया	शनिवार	२५ अक्टूबर	करवा चौथ की सर्घी।
तृतीया	रविवार	२६ अक्टूबर	करवा चौथ (करक चतुर्थी), श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि ७-४९ पर ।
सप्तमी	गुरुवार	३० अक्टूबर	अहोई अष्टमी व्रत (श्री होई माता का पूजन)।
एकादशी	सोमवार	३ नवम्बर	रम्भा एकादशी व्रत सबके लिये ।
त्रयोदशी	बुधवार	५ नवम्बर	पक्ष प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी (धन तेरस), धन्वन्तरी जयंती एवं पूजन, तथा रात्रि के अंत में हनुमज्जन्म एवं मास शिवरात्रि व्रत ।
चतुर्दशी	गुरुवार	६ नवम्बर	नरक चतुर्दशी, हनुमानजी का दर्शन एवं पूजन, तथा विशाखा के सूर्य दिन में १२-६ पर ।
अमावस	शुक्रवार	७ नवम्बर	दीपावली (दीवाली), सायंकाल लक्ष्मी, इन्द्र, कुवेरादि पूजन ।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (कार्तिक शुक्ल पक्ष, ता० ८ नवम्बर से २२ नवम्बर तक) { शरद ऋतु ता० १६ से हेमन्त ऋतु }
[राष्ट्रीय ता० १७ कार्तिक से १ मार्गशीर्ष तक]

प्रतिपदा	शनिवार	८ नवम्बर	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा ।
द्वितीया	रविवार	९ नवम्बर	श्री चन्द्र दर्शन, भाई दूज (भैया दूज), यम द्वितीया, यमुना स्नान ।
षष्ठी	गुरुवार	१३ नवम्बर	डाला छठ (सूर्य षष्ठी), डाले की सायंकाल की पूजा ।
सप्तमी	शुक्रवार	१४ नवम्बर	डाले की प्रातःकाल की पूजा, तथा सूर्य षष्ठी व्रत की पारणा ।
अष्टमी	शनिवार	१५ नवम्बर	गोपाष्टमी, गो-पूजन तथा पंचक प्रारम्भ सायं ५-२६ से।

नवमी	रविवार	१६ नवम्वर	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड (पेठादि) दान, तथा आँवले के वृक्ष की पूजन-परिक्रमा एवं आँवले के वृक्ष के नीचे भोजन तथा वृश्चिक की संक्रान्ति दिन में १०-३ से, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ प्रातः १०-३, से तथा कार्तिक पूजा दिन में १०-३ के वाद।
एकादशी	मंगलवार	१८ नवम्वर	प्रवोधिनी एकादशी (देवोत्थान एकादशी) व्रत सव के लिये, तथा तुलसी विवाह प्रातः १०-४५ भद्रा के पहिले अथवा रात्रि में ९-३९ भद्रा के वाद तथा चातुर्मास व्रत, नियमादि-समाप्ति, भीष्म पंचक व्रतारंभ।
द्वादशी	बुधवार	१९ नवंबर	पंचक समाप्ति रात्रि में ११-३५ पर, तथा अनुराधा के सूर्य सायं ५-५ पर।
त्रयोदशी	गुरुवार	२० नवंबर	पक्ष प्रदोष व्रत, तथा वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत एवं गंगाजी को तुलसी चढ़ाना।
चतुर्दशी	शुक्रवार	२१ नवंबर	वैकुण्ठ चतुर्दशी स्नान एवं दान की, तथा पूर्णिमा व्रत की दिन में २-३८ से।
पूर्णिमा	शनिवार	२२ नवंबर	पूर्णिमा स्नान-दान की दिन में १२-२५ तक, तथा कार्तिकी पूर्णिमा, कार्तिक स्नान, दान, नियमादि समाप्ति, एवं भीष्म पंचक व्रत समाप्ति, तथा विश्वनाथजी की कीर्ति पर बत्ती से आरती एवं पूजन करना, तथा काशी में गोविन्द माधव का वार्षिकोत्सव।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष, ता० २३ नवंबर से ७ दिसंबर तक) [हेमन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० २ मार्गशीर्ष से १६ मार्गशीर्ष तक]

प्रतिपदा	रविवार	२३ नवंबर	कार्तिक व्रत की पारणा।
तृतीया	मंगलवार	२५ नवंबर	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय रात्रि ८-२१।
अष्टमी	शनिवार	२९ नवंबर	श्री महा भैरवाष्टमी व्रत, श्री भैरवनाथजी का दर्शन-पूजन।
दशमी	मंगलवार	२ दिसंबर	ज्येष्ठा के सूर्य रात्रि ८-७ पर।
एकादशी	बुधवार	३ दिसंबर	उत्पन्ना एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	गुरुवार	४ दिसंबर	पक्ष प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	शुक्रवार	५ दिसंबर	श्री मास शिवरात्रि व्रत।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, ता० ८ दिसंबर से २१ दिसंबर तक)

[राष्ट्रीय ता० १७ मार्गशीर्ष से ३० मार्गशीर्ष तक]

द्वितीया	मंगलवार	९ दिसंबर	श्री चद्र दर्शन।

केवल 3 मिनट में
मेजाक्स द्वारा
फोटोस्टेटकापी
प्राप्त करें
फोन ६५२२६
रवि स्टूडियो
- लंका, वाराणसी

पंचमी	शुक्रवार	१२ दिसंबर	पंचक प्रारंभ रात्रि १-२० से।
सप्तमी	रविवार	१४ दिसंवर	श्री भानु सप्तमी पर्व, सूर्य ग्रहण के समान स्नान-दान का फल।
अष्टमी	सोमवार	१५ दिसंवर	मूल के सूर्य एवं धन की संक्रांति रात्रि ९-४८ से तथा खरमास प्रारंभ रात्रि ९-४८ से।
दशमी	बुधवार	१७ दिसंवर	पंचक समाप्ति प्रातः ७-४६ पर तथा मोक्षदा एकादशी व्रत, स्मार्तों के लिये।
एकादशी	गुरुवार	१८ दिसंवर	मोक्षदा एकादशी व्रत वैष्णवों के लिये।
त्रयोदशी	शुक्रवार	१९ दिसंबर	पक्ष प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	शनिवार	२० दिसंवर	पिशाच मोचन यात्रा, स्नान, दर्शन, पूजन, तथा लोटा भंटा का मेला, काशी में पिचाश मोचन तीर्थ पर।
पूर्णिमा	रविवार	२१ दिसंबर	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की प्रातः से, तथा श्री दत्तात्रेय जयंती।

[श्री सूर्य दक्षिणायन] (पौष कृष्ण पक्ष, ता० २२ दिसंबर से ६ जनवरी ८१) [हेमन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १ पौष से १६ पौष तक]

चतुर्थी	गुरुवार	२५ दिसंबर	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत।
सप्तमी	रविवार	२८ दिसंबर	पूर्वाषाढ़ा के सूर्य, रात्रि १०-३७ तथा भानु सप्तमी पर्व, सूर्य ग्रहण के समान स्नान-दान का विशेष फल।
एकादशी	गुरुवार	१ जनवरी	इसवीय सन् १९८१ प्रारंभ।
एकादशी	शुक्रवार	२ जनवरी	सफला एकादशी व्रत सबके लिये।
द्वादशी	शनिवार	३ जनवरी	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र की कामना एवं संतान की फल-प्राप्ति के लिये व्रतारंभ।
त्रयोदशी	रविवार	४ जनवरी	श्री मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	मंगलवार	५ जनवरी	भौमवती अमावस, गंगा-स्नान एवं दान का विशेष फल।

{ श्री सूर्य दक्षिणायन तथा ता० १३ रात्रि से उत्तरायण } (पौष शुक्ल पक्ष, ता० ७ जनवरी से २० जनवरी तक) [राष्ट्रीय ता० १७ पौष से ३० पौष तक] { हेमन्त ऋतु तथा ता० १३ की रात्रि से शिशिर ऋतु }

प्रतिपदा	बुधवार	७ जनवरी	श्री चद्र दर्शन।
तृतीया	शुक्रवार	९ जनवरी	पंचक प्रारंभ, प्रातः ९-२५ से,।
चतुर्थी	शनिवार	१० जनवरी	उत्तराषाढ़ा के सूर्य रात्रि ११-१३ से।
सप्तमी	सोमवार	१२ जनवरी	श्री बाबा मुकुंद का पूजन (बासी खाना)।

अष्टमी	मंगलवार	१३ जनवरी	पंचक समाप्ति सायं ४-६ पर तथा लोहड़ी पर्व एवं रात्रि के अंत में ५-२६ पर मकर की संक्रांति (खिचड़ी) ।
नवमी	बुधवार	१४ जनवरी	मकर संक्रांति (खिचड़ी) का पुण्य काल प्रातः से मध्याह्न तक, तथा देवताओं का दिन एवं दैत्यों की रात्रि ।
एकादशी	शुक्रवार	१६ जनवरी	पुत्रदा एकादशी व्रत सबके लिये ।
द्वादशी	शनिवार	१७ जनवरी	शनि पक्ष प्रदोष व्रत, पुत्र की कामना एवं संतान की फल-प्राप्ति के लिये व्रतारंभ तथा श्री बावे जी की पहिली चोटी ।
चतुर्दशी	सोमवार	१९ जनवरी	पूर्णिमा व्रत की दिन में २-१ से ।
पूर्णिमा	मंगलवार	२० जनवरी	पूर्णिमा स्नान-दान की दिन में १-२ तक, तथा माघ स्नान, दान, नियमादि प्रारम्भ ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (माघ कृष्ण पक्ष, ता० २१ जनवरी से ४ फरवरी तक) [शिशिर ऋतु]

(राष्ट्रीय ता० १ माघ से १५ माघ तक)

तृतीया	शुक्रवार	२३ जनवरी	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी (बड़ी गणेश चौथ) व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ८-३४ तथा श्रवण के सूर्य रात्रि १२-२० पर ।
चतुर्थी	शनिवार	२४ जनवरी	श्री बावे जी की दूसरी चोटी ।
अष्टमी	बुधवार	२८ जनवरी	श्री बुधाष्टमी पर्व, मूंग का दान, स्नान एवं मूंग के भोजन क. विशेष फल ।
एकादशी	शनिवार	३१ जनवरी	षट्तिला एकादशी व्रत सबके लिये एवं श्री बावेजी की तीसरी चोटी ।
त्रयोदशी	सोमवार	२ फरवरी	सोम पक्ष प्रदोष व्रत, धन एवं पुत्र की कामना वालों के लिये व्रतारंभ ।
चतुर्दशी	मंगलवार	३ फरवरी	श्री मास शिवरात्रि व्रत, तथा चौकसियों की पूजा, मेहरे खत्रियों में प्रचलित ।
अमावस	बुधवार	४ फरवरी	मौनी अमावस, प्रयाग अथवा काशी में दशाश्वमेघ घाट पर मौनावस्था में स्नान-दान का विशेष महत्व ।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (माघ शुक्ल पक्ष, ता० ५ फरवरी से १८ फरवरी तक) [शिशिर ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० १६ माघ से २९ माघ तक)

प्रतिपदा	गुरुवार	५ फरवरी	पंचक प्रारम्भ सायं ५-२० से तथा धनिष्ठा के सूर्य रात्रि २-३१ पर ।
द्वितीया	शुक्रवार	६ फरवरी	श्री चन्द्र दर्शन ।

तृतीया	शनिवार	७ फरवरी	श्री बावे जी की चौथी चोटी।
पंचमी	सोमवार	९ फरवरी	श्री वसन्त पंचमी (श्री पंचमी) एवं पंचक समाप्ति रात्रि १२-१४ पर तथा श्री गोविन्द माधव प्रभु स्थापनोत्सव (काशी में)।
सप्तमी	बुधवार	११ फरवरी	श्री अचला सप्तमी (रथ सप्तमी)।
अष्टमी	गुरुवार	१२ फरवरी	कुम्भ की संक्रान्ति दिन में ४-१० पर।
दशमी	शनिवार	१४ फरवरी	जया एकादशी व्रत स्मार्तों के लिए।
द्वादशी	रविवार	१५ फरवरी	जया एकादशी व्रत वैष्णवों के लिए एवं श्री बावेजी की बसन्त की कढ़ाई एवं श्री बावेजी का पूजन।
त्रयोदशी	सोमवार	१६ फरवरी	सोम पक्ष प्रदोष व्रत, धन एवं पुत्र की कामनावालों के लिये व्रतारम्भ।
पूर्णिमा	बुधवार	१८ फरवरी	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की प्रातः से तथा माघ स्नान, दान, नियमादि समाप्ति एवं शतभिषा के सूर्य रात्रि के अन्त में ६-१६ पर।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (फाल्गुन कृष्ण पक्ष, ता० १९ फरवरी से ६ मार्च तक) [शिशिर ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ३० माघ से १५ फाल्गुन तक]

तृतीया	रविवार	२२ फरवरी	श्री संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ९-०।
चतुर्थी	सोमवार	२३ फरवरी	शुक्र तारा रात्रि में १-२५ पर पूर्व में अस्त होगा।
एकादशी	सोमवार	२ मार्च	विजया एकादशी व्रत सबके लिये।
त्रयोदशी	बुधवार	४ मार्च	पक्ष प्रदोष व्रत, श्री महाशिवरात्रि व्रत, (वैद्य नाथ जयन्ती) तथा पंचक प्रारम्भ रात्रि १-६ पर तथा पूर्वा भाद्रपदा के सूर्य दिन में १२-६ पर।
चतुर्दशी	गुरुवार	५ मार्च	श्री महाशिवरात्रि व्रत की पारणा, योगी जिमाना।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (फाल्गुन शुक्ल पक्ष, ता० ७ मार्च से २० मार्च तक) [शिशिर ऋतु

[राष्ट्रीय ता० १६ फाल्गुन से २९ फाल्गुन तक] ता० १४ से वसन्त ऋतु]

प्रतिपदा	शनिवार	७ मार्च	श्री चन्द्र दर्शन।
तृतीया	सोमवार	९ मार्च	पंचक समाप्ति प्रातः ८-१७ पर।
नवमा	शनिवार	१४ मार्च	मीन की संक्रान्ति दिन में ११-५९ पर।
एकादशी	सोमवार	१६ मार्च	आमलकी एकादशी (रंगभरी एकादशी) व्रत सबके लिये।
द्वादशी	मंगलवार	१७ मार्च	भौम पक्ष प्रदोष व्रत, ऋण-दोष-निवारण के लिये व्रतारम्भ; तथा उत्तरा भाद्रपदा के सूर्य रात्रि ८-१५।

त्रयोदशी	बुधवार	१८ मार्च	सावाँ तिल्ले का पूजन (बासी खाना)।
पूर्णिमा	शुक्रवार	२० मार्च	पूर्णिमा व्रत एवं स्नान-दान की प्रातः से तथा होलिका पूजन-होलिका दाह सायं ७-३० के भीतर।

[श्री सूर्य उत्तरायण] (चैत्र कृष्ण पक्ष, ता० २१ मार्च से ४ अप्रैल तक) [वसन्त ऋतु]

[राष्ट्रीय ता० ३० फाल्गुन से १४ चैत्र तक]

प्रतिपदा	शनिवार	२१ मार्च	होलिका विभूति-धारण, काशी में घुरड्डी, चतुष्षष्ठी यात्रा, चौसट्ठी देवी का दर्शन, पूजन।
द्वितीया	रविवार	२२ मार्च	श्री शालिवाहन शाके १९०३ प्रारम्भ।
चतुर्थी	मंगलवार	२४ मार्च	श्री अंगारकी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि ९-२४।
सप्तमी	शनिवार	२८ मार्च	श्री शीतला अष्टमी का बासी बनाना तथा सिलाहो सप्तमी (पंजाब में प्रसिद्ध)।
अष्टमी	रविवार	२९ मार्च	श्री शीतला अष्टमी पूजन (बासी खाना)
दशमी	मंगलवार	३१ मार्च	रेवती के सूर्य प्रातः ६-५९।
एकादशी	बुधवार	१ अप्रैल	पापमोचनी एकादशी व्रत सबके लिये, तथा पंचक प्रारम्भ दिन में ८-४८ पर।
द्वादशी	गुरुवार	२ अप्रैल	पक्ष प्रदोष व्रत, तथा वारुणी पर्व प्रातः ७-१७ से दिन में ३-५८ तक।
चतुर्दशी	शुक्रवार	३ अप्रैल	श्री मास शिवरात्रि व्रत।
अमावस	शनिवार	४ अप्रैल	अमावस स्नान-दान की, तथा संवत्सर समाप्ति।

विशेष :—पंचक-समाप्ति प्रथम नवरात्र को सायंकाल में होगी।

॥ ऊ शांतिः ॥ शांतिः ॥ शांतिः ॥

॥ शुभम् भूयात् सर्वजगताम् ॥

संदेहास्पद तिथ्यादि विवेचन

गंगा दशहरा अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (पुरुषोत्तम मास) १०, शनिवार को ही होगा, शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में नहीं, मलमास होने पर भी (ज्येष्ठ मलमासे सति तत्रैव गंगा दशहरा कार्या नतु शुद्धे इति हेमाद्रौ ऋष्य श्रृगोलेः इति वचनात्) अधिक शुक्ल पक्ष में ही करना चाहिये, शुद्ध पक्ष में नहीं। शुद्ध पक्ष में निर्जला एकादशी करनी चाहिये।

विजया दशमी, ६ शनिवार अपराह्न काल में व्याप्त है एवं रविवार को भी अपराह्न काल में व्याप्त है, दोनों दिन ही अपराह्न काल में ही व्याप्त है। पहले दिन श्रवण नक्षत्र भी प्राप्त है, (दिनद्वयेऽपरान्ह व्याप्त्य व्याप्त्यो-रेकतरं दिने श्रवण भोगे यस्मिने सैव ग्राह्या एवं पराह्नदेशे व्याप्ताबूह्यम्, दोनों दिन में अपराह्न व्यापिनी और अपराह्न में न रहनेवाली दशमी को किसी एक दिन, जिस दिन श्रवण से योग हो, ग्रहण करनी चाहिये।) उक्त परिस्थितियों में और वचनों से विजया दशमी ६ शनिवार को होगी, राजाओं के पट्टाभिषेक में दूसरे दिन उदयकाल-व्यापिनी दशमी ली जायगी।

॥ श्रीराम ॥

॥ चूड़ाकरण संस्कार ॥

लेखक—श्री सत्सङ्ग परिवार के संस्थापक, संत श्री छोटे महाराज ।

जब कि दीर्घायुष्य लाभ, श्रेष्ठ सन्तति उत्पन्न करने का सामर्थ्य, ऐश्वर्य की प्राप्ति, हृष्ट-पुष्ट हो महान् वीर बनने की इच्छाएँ जीव के हृदय में सर्वदा बनी रहती हैं, तब क्यों न उसे प्राप्त करानेवाले संस्कार उचित रीति से तथा उचित समय पर किये जायँ ताकि मानस के सभी गुण विकसित हों ?

चूड़ाकरण संस्कार द्वारा इच्छित सभी सद्गुणों की जागृति होती है। ऐसा शुक्ल यजुर्वेद में कहा गया है। "निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्या य प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ।" ३/३३/ हे यजमान् ! इस क्रिया के कारण आयु के निमित्त अन्नादि के भक्षणार्थं, बहुसन्तति और अपरिमित धन की पुष्टि के लिये तथा श्रेष्ठ बल पाने के निमित्त मैं तुम्हें मूड़ता हूँ। आश्वलायन गृह्य सूत्रकार भी ऐसा ही कहते हैं। "तेन ते आयुष् वपामि सुश्लोकाय स्वस्तये" /१/१७/१८/ । व्यक्ति के दीर्घायुष्य, सौन्दर्य तथा कल्याण की प्राप्ति के लिये चूड़ाकरण संस्कार प्रयोजन है तथा इसके न किये जाने पर सभी गुणों का ह्रास होता है। यह एक विशुद्ध वैज्ञानिक सत्य परम्परा है।

मस्तक के बालों को चूड़ा कहा जाता है। चूड़ाकरण में चूड़ा का संस्कार किया जाता है। अर्थात् असंस्कृत रूप हरण कर संस्कृत रूप दिया जाता है। शिशु को अन्नप्राशन संस्कार के बाद जो भी भोजन कराया जाता है, उसका रस ऊर्ध्वमुख प्रवाहित होकर मस्तिष्क पर इत्र के रूप में जमा होता है, वह रस-रक्तादि सप्त धातुओं से निर्मल होता है। इसलिये वह ज्ञान-सरिताओं का उद्‌गम-स्थल माना जाता है। यह एकदम विशुद्ध जल के रूप में होता है। जल में अग्नि (विद्युत) गर्भ (छिपे हुए) रूप में रहती है। उस अग्नि में जो तपांस होता है, वह जल से बाहर निकलता रहता है। उसी प्रकार शिशु के मस्तिष्क से आग्नेय तत्व बालों के रूप में उठता रहता है, जिस प्रकार "काटे पै कदरी फरहिं", उसी प्रकार गर्भावस्था के जो बाल रहते हैं, वह मलिन कहे जाते हैं। उस मालिन्य-दोष-निवृत्ति के लिये एक बार उसे हटा देना पड़ता है। गर्भगत बालों के रहते हुए उसकी अशुद्धि के लोलुप बहुत से बाधक कुदृष्टि द्वारा शिशु पर आक्रमण की ताक में रहते हैं। जब चूड़ाकरण संस्कार हो जाता है, तब उसके बाद इस विषय में निर्भयता आ जाती है। इस रहस्य को बाल चिकित्सा विशेषज्ञ भली-भाँति जानते हैं क्योंकि आयुर्वेद ग्रन्थों में इसके प्रमाण प्राप्त होते हैं। जैसे—नख, रोम तथा केशों के अपमार्जन अथवा छेदन से हर्ष, लाघव, सौभाग्य और उत्साह की वृद्धि तथा पाप का उपशमन होता है।

"पापौघ शमनं केश, नख रोमापमार्जनं ।
हर्षं लाघव सौभाग्यकर मुत्साहबर्धनम् ।"

सुश्रुत चिकित्सा स्थान ॥ २४ ॥ ४२ ॥

केश, श्मश्रु तथा नखों के काटने तथा प्रसाधन से पौष्टिकता, बल, आयुष्य, शुचिता और सौन्दर्य की प्राप्ति होती है।

"पौष्टिकं वृष्यमायुष्यं, शुचिरूपं विराजनं ।
केश श्मश्रु नखादीनां, कर्तनं संप्रसाधनम् ।"

॥ चरक संहिता ॥

चूड़ाकरण संस्कार काल :—पारस्कर गृह्य सूत्रकार का मत है "चूड़ाकरण संस्कार जन्म के पश्चात् प्रथम वर्ष के अन्त में अथवा तृतीय वर्ष की समाप्ति के पूर्व करना चाहिये।"

"सांवत्सरिकस्य चूड़ाकरणम् ।"
संवत्सरो जातो यस्य स सांवत्सरिक ।।
सचाव्य संवत्सर स्यांति मे मासे ।
तृतीये वा प्रतिहते ।
अथ तृतीये संवत्सरे अपूर्ण चूड़ाकरणं कुर्यात् ।।"

स्मृतिकार शिरोमणि श्री मनु भी इस पक्ष का समर्थन करते हुए कहते हैं—"सब द्विजातियों का मुण्डन पहले वा तीसरे वर्ष में धर्म और वेद की आज्ञानुसार करना चाहिये,

चूड़ाकम द्विजातीनां, सर्वेषामेव धर्मतः ।
प्रथमेऽब्दे तृतीये वा कर्तव्यं श्रुति नोदनात् ।। २-३५ ।।"

यदि कोई चूड़ाकरण संस्कार के निर्धारित समय के पूर्व चूड़ाकरण कर ले, तो वह न करने के समान होगा। क्योंकि जब तक ६ महीने तक के किए हुए अन्न-प्राशन के अन्न-रस की मस्तिष्क तक पहुँच न हो जाय और वे बाल रूप में न आ जायँ, तब तक मुण्डन संस्कार करने से नवजात शिशु के अपरिपुष्ट सिर के पक जाने का भय बना रहता है। हठपूर्वक मुंडन कर देने से बच्चे से हाथ धोना पड़ता है। इसलिये जब कि अन्न-रस के बाल होने लग जायँ, सिर कुछ पुष्ट हो जाय, तभी चूड़ाकरण संस्कार करना उचित है। यदि कोई निर्धारित समय के पश्चात् जब चाहे तब करता है, तो उससे गर्भजनित बालों की मलिनता से उसे दुष्ट बाधाएं घेरती हैं तथा उसे दिव्य ज्ञानोदय होकर कुशाग्र बुद्धि नहीं प्राप्त होती। अतः अन्नप्राशन के बाद संस्कार विशेषज्ञों से निर्धारित काल में होनेवाला ही चूड़ाकरण संस्कार है। इनका परस्पर संबंध है। पहले, गर्भ में जब बालक रहता है, उस समय उसके कोई भी कार्य उसके मस्तिष्क-यंत्र पर आधारित नहीं रहते हैं। मातृ-मस्तिष्क से ही उसका संचालन होता है जो कि ज्ञान के नाल-तन्तुओं के द्वारा बालकों में प्रविष्ट होता है। प्रसूति के समय उसी मातृ मस्तिष्क का अंश बालक के मूलाधार में प्रतिष्ठित होता है। इसीलिये प्रसूति के समय भी उसकी (बालक की) मूल प्रवृत्ति रहती है। क्रमशः वही मस्तिष्क मूलाधार के बाद स्वाधिष्ठान, स्वाधिष्ठान के बाद मणिपूर, मणिपूर से अनाहद, और अनाहद से विशुद्धि, विशुद्धि से आज्ञा और आज्ञा के बाद ब्रह्मरन्ध्र और ब्रह्मरन्ध्र के बाद पूर्णगिरि-चक्र पर प्रतिष्ठित होकर पूर्णतया संचालित होने लगता है। इसमें साल भर का समय लगता है। पूर्ण गिरि स्थान पर ही शिखा का स्थान है जिसको मुख्य चूड़ा या शिखा कहते हैं। शिखा रख लेने से मनुष्य की चेतना का सर्वदा ऊर्ध्वाभिमुख प्रवाह होता रहता है जिससे उसकी उन्नति होती रहती है। इस तरह से शिखा का महत्व केवल मनुष्य-शरीर में ही नहीं, पर्वतों की चोटियों की भी होती है। वृक्षों पर, मकान-मंदिरों तक में उसका निर्माण किया जाता है। बराबर उन्नतिशील रहने के लिये यह आवश्यक है।

चूड़ाकरण संस्कार का मनोविज्ञान से संबंधः—लड़कों में स्वभावतः यह इच्छा पाई जाती है कि हम बड़े हों। जो लड़का बड़ा रहता है, वह छोटे लड़कों को सगर्व चिढ़ाता है कि "हम तुमसे बड़े हैं, तुम छोटे हो"; और जो लड़के छोटे रहते हैं, वे झेंपने लगते हैं। इससे मनोविज्ञान द्वारा बालकों का ऊँचाई के प्रति आकर्षण पाया जाता है जो कि उनकी उन्नतिशीलता का उत्साहवर्धक होता है। जहाँ तक चोटी की ऊँचाई रहेगी, वहाँ तक उसमें उतना ही उन्नत भाव को प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार मनोविज्ञान शास्त्र के आधार पर शिखा रखना बहुत ही उपादेय है।

शिखा का योगशास्त्र से घनिष्ट संबंध :—शिखा से ब्रह्मचर्य वल प्राप्त होता है। श्री हनुमानजी ऊर्ध्वरेताओं (ब्रह्मचारियों) में अगुआ हैं "मन्मथ-मथन ऊर्द्धरेता"। आप नित्य ही हनुमानजी का दर्शन करते हैं, परन्तु जरा ध्यान से दर्शन कीजिये। श्री हनुमानजी की मूर्तियों में लाङ्गल (पूँछ) पीठ की तरफ से सीधे ऊँचे उठकर शिखा के स्थान पर स्थित हो गगन-मण्डल का स्पर्श करती रहती है। क्योंकि वे परम योगनिष्ठ हैं जैसा कि विनय पत्रिका में कहा गया है "सिद्ध सुरवृन्द योगीन्द्र सेवित सदा।" उनकी यह लाङ्गल (पूंछ) पीठ के सुषुम्ना-मार्ग (सुषुम्ना लाल रंग की पोली तथा मोटी नाड़ी होती है जो पीठ की रीढ़ की हड्डी से आरम्भ होकर मस्तिष्क के शिखर-स्थान पर्यन्त पहुँच कर पूर्ण होती है।) से सीधे खड़ी होकर सुषुम्ना-मार्ग का रूप लेती है। वह भी आगे चलकर मूर्धा-मण्डल (ब्रह्माण्ड, कपाल का मध्य-भाग) तक पहुँचकर लहराती हुई पूर्ण योग-सिद्धि का सूचक है। शिखा का मूल मूलाधार से आरम्भ होकर शिरोमण्डल पर्यन्त उन्नत होकर मूर्धामण्डल से ऊपर जगन्मण्डल से सटता है जिसमें खेचरी मुद्रा (योग की एक मुद्रा) द्वारा दिव्याऽमृत आकर्षण कर समग्र शरीर का पूर्ण संरक्षण-संवर्धन होता है। यदि उपरोक्त प्रकार से श्री हनुमान जी का दर्शन तथा ध्यान किया जाय, तो योग-वल की निरंतर अभिवृद्धि होती रहती है।

शिखा का आयुर्वेद से घनिष्ट संबंध :—मस्तक के भीतर ऊपर की ओर शिरा तथा सन्धि का सन्निपात (मेल) होता है। वहीं रोमावर्त (वालों का भँवर) में अधिपति (मर्मस्थान) है। इस अङ्ग को किसी भी प्रकार का आघात लगने पर तत्काल मृत्यु हो जाती है। अतः आयुर्वेद का महान् ग्रन्थ सुश्रुत संहिता इस मर्मस्थल की रक्षा के लिये शिखा का विधान करता है।

"मस्तकाभ्यान्तरोपरिष्टात् शिरा सन्धि सन्निपातो रोमावर्ताऽधिपतिस्तत्रापि सद्यो मरणम्।"
(शरीर स्थान ६।८३)

शिखा का भौतिक-विज्ञान से संबंध :—पाठक गण कह सकते हैं कि भौतिक-विज्ञानवादियों ने कल्पनातीत उन्नति की है। क्या उन्हें शिखा थी या है? तब शिखा (चोटी) का महत्व बस साम्प्रदायिक है। यह कुछ वर्गों की रूढ़ि परम्परा है। कोई सार्वभौम शाश्वत सिद्धान्त नहीं। पाठकों का यह कहना उचित ही है। भौतिक-विज्ञान-वादियों ने कल्पनातीत उन्नति की है। मैं अपने शब्दों में कह सकता हूं : आज भौतिक विज्ञान पर जगत् खड़ा है। पर किसी का पैर खूब मजबूत हो और उसमें नई-नई बात सोचने की तथा उन वस्तुओं को खोज-खोज कर उनके द्वारा नव-नव वस्तुओं के आविष्कार की गहरी सामर्थ्य हो, परन्तु उसमें सद्बुद्धि का अभाव हो, तो क्या उसका वह नव-नव आविष्कार उसे या समाज को रागद्वेष के अग्निमय मार्ग में उतारकर विनाश की ओर प्रवृत्त नहीं कर देगा? आज का भौतिक विज्ञान क्या जगत् के लिये अभिशाप सिद्ध नहीं हो रहा है? आज के विशिष्ट राष्ट्रों का युद्ध क्या इसका ज्वलन्त उदाहरण नहीं है? अपने देश के सर्वश्रेष्ठ महात्मा ईसा जैसे सत्पुरुष को शूली पर चढ़ाकर हत्या करना क्या वैज्ञानिकों के पूर्वजों की देन नहीं है? उन्होंने स्वर्गारोहण-काल में परमात्मा से प्रार्थना की थी कि हे परमात्मा, हमारे देशवासियों को सद्बुद्धि प्रदान करो। महात्मा ईसा के स्वर्गारोहण-काल में जब उनके शिष्य रुदन कर कहने लगे कि आप हम लोगों को मध्य में ही छोड़कर स्वर्गारोहण कर रहे हैं, तब उन्होंने कहा कि "पश्चिम में सूर्य अस्त होने जा रहा है, अब पूर्व में सूर्य उदित होगा, तब उससे पश्चिम प्रकाश प्राप्त करेगा।" आज भौतिक वैज्ञानिकों को सद्बुद्धि की आवश्यकता है। इसके बिना उनका सारा प्रयास ताश के महल की भाँति ढेर हुआ जा रहा है और होता जाएगा, यह एक ध्रुव सत्य है। सद्बुद्धि उदित होने का स्थल मस्तिष्क है जहाँ ज्ञान-तन्तुओं का जमघट है। उन सभी तन्तुओं का केन्द्र शिखा-स्थान है। उस स्थल पर ढेर से

वालों का समुदाय रखना यह भाव व्यक्त करता है, "तुम्हारी सद्बुद्धि अनेकों शाखाओं वाली हो तथा उत्तरोत्तर बढ़नेवाली हो। तभी तुम अन्वेषण किए हुए वैज्ञानिक आविष्कारों से उत्पादित नाना संपत्तियों का केवल योग ही नहीं, भोग भी कर सकोगे।" जैसा कि मानसकार का निर्णय है—"जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना॥"

शिखा में गाँठ बाँधने का यह मतलब है: अनेकों शाखाओं वाली वर्धनशील सद्बुद्धि की प्रतीक शिखर में जो गाँठ बाँध रहे हैं, यह वक्त पर काम आवे। इसके लिये हमारी एक पंजाबी कहावत प्रसिद्ध है, "बन्धा सो लब्भा, खुल्ला सो डुल्ला। इस तरह शिखा एक शाश्वत तत्व है। यह साम्प्रदायिक संकीर्णता-शून्य दिव्य आलोक है जिससे विश्व आलोकित हो सकता है। यह वर्ग विशेष की रूढ़ि परम्परारूप दरिद्रता नहीं, यह सद्बुद्धि-रूप चिन्तामणि की खान है।

इस प्रकार चूड़ाकरण संस्कार द्वारा अद्वितीय उन्नति की कल्पना बिना गुरु के नहीं हो सकती। यदि गुरुजनों की उपेक्षा कर, संस्कार को त्याग कर, कोई अपने बच्चों को उन्नति के शिखर पर चढ़ाने का प्रयास करने चलेगा, तो उसके बच्चों को ज्ञान तो अवश्य प्राप्त होगा, पर वह उल्टा ज्ञान प्राप्त होगा। उसका वह उल्टा ज्ञान तथा विज्ञान उसे उद्धत बनाकर विश्व-रक्षण के तत्वों के निर्माण की प्रेरणा न देकर, विश्व-संहार के प्रसाधन के निर्माण में प्रगति देगा। अतः स्मरण रखना चाहिये कि चूड़ा-स्थान गुरु-स्थान है, गुरु ही उसका देवता है। वेद-शास्त्र के रहस्यों को ठीक-ठीक जाननेवाले गोस्वामी तुलसीदासजी ने चूड़ा संस्कार में गुरु शब्द का प्रयोग खूब समझ-बूझ कर किया है।

"चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई।
बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई॥"

गुरु अर्थात् जो वेदादि-शास्त्रों को धारण करनेवाला दृढ़निश्चयी, भारी-भरकम हो। वस्तुतः, गुरु से अधिक कोई भारी तत्व नहीं है। इसलिए गुरु को ही मूल स्थान का देवता माना गया।

हमारे शरीर में सिर का स्थान :—"ऊर्ध्वमूलमधः शाखम्"। गीता के इस श्लोक से सिर को ही मूल माना गया है। वस्तुतः यह शरीर का सबसे आगे या ऊपर का भाग है। इसे ही हम प्रत्येक कार्य में अगुवा पाते हैं। जैसे कोई किसी के विरोध में खड़ा होता है, तो हम कहते हैं—"अमुक ने सिर उठाया है।" यदि कोई व्यक्ति अपने स्वरूपानुकूल या प्रतिष्ठानुकूल कार्य के लिए कटिबद्ध हो खड़ा होता है, तब हम कहते हैं कि "उसका सिर ऊँचा करना उचित ही है।" यदि कोई बकवाद करके परेशान करता है, तब हम कहते हैं—"क्यों सिर खाली कर रहे हो ?" यदि कोई घर का बड़ा किसी बालक के अनुचित कामों की उपेक्षा करके उसे उद्दण्ड बनाता है, तब बरबस हमारे मुँह से निकल पड़ता है—"अमुक ने उसे सिर पर चढ़ा लिया है।" यदि किसी ने किसी सन्त महानुभाव की श्रेष्ठ बातों को मान लिया, तब हम कहते हैं कि "अमुक ने उस सन्त की बात शिरोधार्य कर ली।" इत्यादि। असल में सिर ही सर्वाधार है। उस पीठ पर गुरु को कैसे प्रतिष्ठित किया जाय, इसको इस प्रकार समझ सकते हैं। दो हाथ, दो पैर, चार पावे हैं, चार पावों वाले शरीररूपी सिंहासन पर शिर-रूपी मंगल कलश स्थापित हुआ है। जिस प्रकार मंगल कलश पर पञ्च-पल्लव शोभित होते हैं, उसी प्रकार शिर-रूपी मंगल कलश पर शिखा शोभित होती है। जैसे कलश पर प्रधान देवता विराजमान रहते हैं, उसी तरह शिखा स्थान में प्रधान देवरूप में गुरु विराजमान हैं। जिस प्रकार प्रधान देवता के स्थान में उनके सहायक अंग देवताओं

का मंडल रहता है, उसी तरह शिखा के जितने बाल हैं, वही गुरु-मण्डल हैं। उनका प्रधान गुरु के प्रति विनीत वेष शिखा-बन्धनरूप मर्यादा-बन्धन से बताया जाता है, क्योंकि गुरु-मण्डल समूचा प्रधान गुरु का शिष्य है। भगवान श्री रामचन्द्रजी ने इस सिद्धान्त को स्वीकार किया है :—

"माथे पर गुरु मुनि मिथिलेसू।
हमहिं तुम्हहिं सपनेहुँ न कलेसू।।"

शिष्यों का प्रधान गुण विनय है। विनय भी शरीर, मन, वचन, ये तीनों तरह से होना चाहिए। इसलिए शिखा भी तीन फेरे से बांधी जाती है। मानसकार ने प्रधान गुरु वशिष्ठ जी तथा उनके विनीत शिष्य-मण्डल को इसी गम्भीर आशय से चूड़ाकरण संस्कार में उपस्थित किया जो कि इस चौपाई से सुस्पष्ट है :—

"चूड़ाकरन कीन्ह गुर जाई।
बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई।।"

[बोलो सियावर रामचन्द्र महाराज की जय।]

संक्षिप्त जीवनी

पं० शिवनाथ जी शर्मा कुमड़िये

लें०—डा० सोभनाथ शर्मा, एवन मेजर, ए. एस. सी.

हिन्दी भाषा के सुप्रसिद्ध हास्यरस लेखक, पं० शिवनाथ शर्मा के पितामह, पं० मुरली मिश्र कुमड़िये पंजाब के निवासी थे। उनके सबसे छोटे पुत्र पं० दामोदर जी जो वेदाध्यायी तथा कर्मकाण्डी थे, पंजाब से लखनऊ आकर बस गये थे। पं० दामोदर जी हाथ-पैर के बलिष्ठ तथा नामी पहलवान थे। पं० शिवनाथ जी का जन्म काशी में सम्वत १९२४ की फाल्गुन कृष्ण ११ को हुआ था। आरम्भ में पंडितजी ने गुरुजी के यहाँ साधारण शिक्षा प्राप्त की। फिर स्कूल में भरती हुये। साथ ही साथ वे स्वनामधन्य विद्वद्वर, पं० ज्ञानेश्वर जी महराज से संस्कृत पढ़ते रहे। स्कूली शिक्षा पूरी करके वे कालेज में प्रविष्ट हुये और बी० ए० तक पढ़ा। शिक्षा के बाद पं० शिवनाथजी स्थानीय खत्री पाठशाला में प्रधानाध्यापक हो गये। बाद में यह पाठशाला काली-चरण हाई स्कूल में परिवर्तित हो गयी जिसके प्रधानाध्यापक आचार्य बाबू श्याम सुन्दर दास थे। पंडितजी इस स्कूल के हिन्दी अध्यापक नियुक्त हुये; पर साथ ही साथ वे अन्य विषयों को भी पढ़ाते थे। पंडितजी की शिक्षा-पद्धति बहुत अच्छी थी और उनकी गणना एक सुयोग्य, अनुभवी अध्यापक के रूप में होती थी।
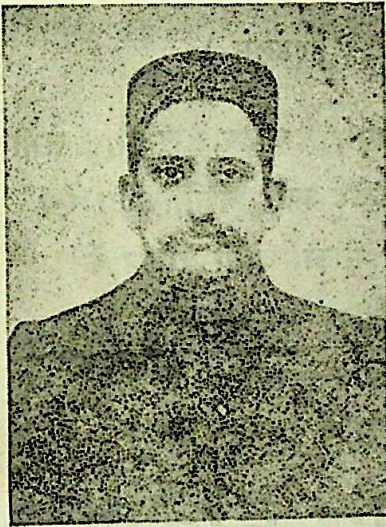
विद्या-व्यसन

शर्माजी को प्रारम्भ ही से हिन्दी-सेवा का शौक था। कालेज में प्रवेश करने के पहले ही से आपने हिन्दी में लिखना प्रारम्भ कर दिया था। आर्थिक अवस्था अच्छी न होने पर भी आपने सरस्वती की सेवा से मुँह न मोड़ा। संस्कृत के काव्यों का आपने अच्छा अनुशीलन किया था। प्रातःकाल आप नित्य कुछ समय श्री मद्भागवत का पाठ किया करते थे। संस्कृत साहित्य के साथ आप कर्मकाण्ड के भी अच्छे ज्ञाता थे और यजमानों के यहाँ सब कार्य स्वंय कराते थे। आपने बहुत से लोगों को कर्मकाण्ड की शिक्षा देकर उन्हें योग्य बनाया। संस्कृत के अति-रिक्त आप अंग्रजी भाषा के भी अच्छे विद्वान थे। अंग्रेजी के प्रायः सभी प्रधान लेखकों और कवियों की रचनाओं का आपने अध्ययन किया था। अंग्रेजी की कितनी ही उत्तम कोटि की कवितायें आपको कंठस्थ थीं। आपका बंगला भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। कई बंगला पुस्तकों का आपने हिन्दी में अनुवाद किया था जिसमें "कलि-युगेर प्रह्लाद" का अनुवाद प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त आप उर्दू भाषा भी जानते थे और फारसी भाषा का भी थोड़ा-बहुत ज्ञान था। कभी-कभी आप फारसी का "शाहनामा" पढ़ा करते थे। लेखक के अतिरिक्त पं० शिवनाथ जी हिन्दी के अच्छे कवि थे। आप ब्रज भाषा तथा खड़ी बोली, दोनों में आशु कविता करते थे।

हिन्दी-सेवा

पं० शिवनाथ जी हिन्दी के अनन्य उपासक थे। उन्होंने सन् १९०५ में "रसिक पंच" नाम का मासिक पत्र निकाला जो थोड़े ही दिन चला। इसके बाद कलकत्ते से पं० सदानन्द मिश्र के सम्पादकत्व में निकलनेवाले साप्ताहिक पत्र "सार सुधानिधि" में 'चार वार्ता' के शीर्षक से आप लेख लिखते रहे। आपके कई लेख "उचित वक्ता" तथा "भारत मित्र" में निकले थे। भारत जीवन प्रेस, बनारस से निकलनेवाले "साहित्य सागर" त्रैमासिक का भी आपने सम्पादन किया। लखनऊ की "गोपाल पत्रिका" तथा "वसुन्धरा" में भी आपके लेख छपते रहे। लखनऊ में उस समय हिन्दी की दशा बड़ी शोचनीय थी। लखनऊ उर्दू का गढ़ कहलाता था। घर-घर उर्दू का प्रचार था। स्कूलों में पढ़नेवाले हिन्दी विद्यार्थियों की संख्या १० प्रतिशत से भी कम थी। श्री अमृत लाल नागर के शब्दों में "नवाबों के नगर में हिन्दी का विरवा लगानेवालों में पं० शिवनाथ शर्मा प्रधान थे।" ऐसी विषम परिस्थिति में पंडितजी ने सन् १९०५ में अपना निजी प्रेस, "दामोदर प्रेस" के नाम से खोला और साप्ताहिक पत्र "आनन्द" का प्रकाशन आरम्भ किया। सन् १९२१ में "आनन्द" का दैनिक संस्करण भी आरम्भ हो गया। यद्यपि इस कार्य में पंडितजी को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, पर पंडित जी अपनी जीवन-लीला समाप्त होने तक पत्र को निकालते रहे। राजनीति में "आनन्द" नरम दल की नीति का अनुयायी था, पर समय-समय पर सरकार की खरी, तीव्र आलोचना करने में नहीं चूकता था। कई अवसरों पर सरकार ने कड़ी चेतावनी भी दी थी।

पं० शिवनाथ जी अपने समय के हास्य-रस के प्रसिद्ध लेखक थे। 'आनन्द' में 'मि० व्यास की कथा' शीर्षक से आपके हास्य के राजनीतिक तथा सामाजिक लेख निकला करते थे। इन लेखों की हिन्दी संसार में बड़ी धूम थी। अन्य रसों की अपेक्षा हास्यरस पर कलम चलाना साधारण काम नहीं है। व्यंग्य और विनोद की खूबी है कि वह देश-काल-पात्रोपयोगी हो, साथ ही साथ जिस व्यक्ति पर व्यंग्य की बौछार की गयी हो, उसे अरुचिकर भी न लगे। पण्डितजी के लेखों में यही बात होती थी। इन लेखों का आदर अन्य भाषा वाले भी करते थे। गुजराती के "जैन शासन" पत्र में 'पुष्पमाला' शीर्षक से इन लेखों के कई अनुवाद छपे थे। मि० व्यास की कथा शीर्षक से पण्डितजी ने करीब २५० लेख लिखे थे जिनमें से १०० लेखों का संग्रह पुस्तक रूप में छपा भी था। इन लेखों के अतिरिक्त आपने बहुत से प्रहसन, नाटक तथा उपन्यास भी लिखे थे—बहसी पण्डित, दरबारी लाल, नवीन बाबू, मानवी कमीशन, नागरी निरादर, गदर का फूल इत्यादि। इनका नागरी निरादर नामक प्रहसन काशी में अभिनीत भी हुआ था।

पण्डितजी लेखक के अतिरिक्त एक अच्छे कवि थे। आपने सरोज-लतिका, प्रयोग पारिजात, राम-राज्याभिषेक आदि कई कविता के ग्रन्थ लिखे थे, पर वे आपकी बिमारी के कारण अधूरे रह गये।

वास्तव में पण्डितजी हिन्दी के अनन्य सेवक थे। उनका सारा जीवन हिन्दी-सेवा ही में व्यतीत हुआ। श्री नागर जी के शब्दों में "शिवनाथ जी की हिन्दी-लगन आज भी अनुकरणीय है। अपने समय में उन्होंने पत्र-कारिता के स्तर को उठाया। उन्होंने हिन्दी के बिरवे को अपने खून-पसीने से सींचकर पल्लवित और पुष्पित कर दिखाया।" पण्डितजी के निधन पर कलकत्ते के स्वतन्त्र ने लिखा था—"वे पुराने ढंग के हिन्दी के सेवक थे जिनसे हिन्दी की सेवा किये बिना नहीं रहा जाता था और वे अपनी हिन्दी-सेवा का ढोल पीट कर चन्दा नहीं माँगते थे।"

साहित्य-सेवा के अतिरिक्त अन्य कार्य

पण्डितजी एक सुयोग्य अध्यापक, लेखक, कवि और कर्मकाण्डी तो थे ही, पर साथ ही साथ आप अन्य साहित्यिक, धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में पूर्ण रुचि रखते थे। आपके समय में लखनऊ में हिन्दी साहित्य सभा नाम की संस्था स्थापित हुई थी जिसके आप उप-सभापति थे। लखनऊ के पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन जो पं० श्रीधर पाठक की अध्यक्षता में हुआ था, उसकी सफलता का बहुत कुछ श्रेय आप पर था। आप १० दिन तक घर ही नहीं गये थे। जिन प्रतिनिधियों ने आपके परिश्रम तथा आतिथ्य-सत्कार को देखा था, वह इस बात को बाखूबी जानते हैं। आपकी कार्य-व्यस्तता का यही प्रमाण यथेष्ट है कि आप सम्मेलन के अधिवेशन में केवल एक दिन कुछ घण्टों के लिए सम्मिलित हो सके थे। स्कूल के कार्यकाल ही में आपने प्रेम गोष्ठी नाम की संस्था कायम की थी जिसके अध्यक्ष डा० श्याम सुन्दर दास जी थे। इस गोष्ठी के सदस्य प्रति मास बारी-बारी से एक स्थान पर जमा होते थे। साहित्य सम्बन्धी चर्चा तथा कुछ मनोविनोद की बातें भी होती थीं। यह क्रम कई वर्ष चलता रहा। पण्डित जी ने बहुत दिनों तक अवध गोशाला, लखनऊ, के प्रधान मंत्री का कार्य किया। आपकी गो-सेवा की प्रशंसा श्री गोबर्धन पीठ के १०८ श्री शंकराचार्य जी ने भी की और इन्हें "गोसेवा धुरन्धर" की उपाधि से विभूषित किया था।

पण्डितजी ने स्थानीय हिन्दी लेखकों और कवियों को उत्साहित तथा पुरस्कृत करने के लिए एक गोष्ठी का भी आयोजन किया था जिसकी बैठकें 'आनन्द' कार्यालय में होती थीं और जिसमें कविगण अपनी कवितायें सुनाते थे जो बाद में आनन्द में प्रकाशित होती थीं। यह क्रम पण्डितजी की मृत्यु के बाद भी उनके ज्येष्ठ पुत्र, पं० महेश नाथ शर्मा ने जारी रखा और उसकी अन्तिम बैठक १ अप्रैल, १९४२ में उपन्यास सम्राट श्री प्रेमचन्द के सभापतित्व में हुई थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पं० शिवनाथ शर्मा का समस्त जीवन साहित्य और समाज की सेवा में व्यतीत हुआ। यद्यपि उन्हें समय-समय पर पारिवारिक, सामाजिक और सर्वोपरि आर्थिक कष्टों का सामना करना पड़ा, पर वे अपने ध्येय से अलग नहीं हुए। उनका देहावसान सं० १९८५ में केवल ६१ वर्ष की अवस्था ही में हो गया और उनके बहुत से कार्य अपूर्ण ही रहे। उनकी मृत्यु पर हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान और कवि श्रीधर पाठक ने यह उचित ही लिखा था—"पं० शिवनाथ शर्मा की मृत्यु हिन्दी भाषा और हिन्दी संसार, दोनों के लिए एक असह्य विषम घटना है।"

॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

❀ वर्षे हर्ष-प्रकर्ष स्यात् ❀

॥ संवत् २०३७ में मेषादि द्वादश राशियों का संक्षिप्त फल ॥

राशिफल देखने का क्रम—१ राशि में ९ अक्षर होते हैं, उनमें अपने नाम का जो अक्षर हो, वही अपनी नाम राशि समझनी चाहिये। उस राशि का जो फल लिखा है, वही अपना राशिफल समझना चाहिये। यदि अपनी जन्म-पत्री की राशि मालूम हो, तो उसी राशि से फल देखना चाहिये क्योंकि ग्रह-गोचर का फल जन्म-राशि से ही देखना चाहिये। यदि जन्म-राशि न मालूम हो, तो नाम राशि से ही विचारना चाहिये।

मेष—(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ) वर्ष मध्यम प्रकार है। मान, प्रतिष्ठा, पदोन्नति, व्यापार में लाभ, तथा सुख-शान्ति की प्राप्ति होने का योग, शिक्षा में प्रतिकूलता रहे, वर्ष के पूर्वार्ध में संतान सुख कम रहने का योग, स्त्री का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहे, नौकर-चाकर से सुख की प्राप्ति का योग, धन-लाभ में संघर्ष से प्राप्ति, परिवार में अशांति, शत्रु-पक्ष से सावधान रहें, न्यायालय में द्रव्य का अपव्यय, गृह-मकान-निर्माण एवं जमीन-जायदाद की योजना में सफलता की प्राप्ति का योग, चोट-चपेट की सम्भावना, वर्ष के १-५-७-९ माह नेष्ट हैं, शेष मास शुभफलकारक हैं।

वृष—(ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो) वर्ष सामान्य है, वाहन से सावधान, मानसिक अशांति, उदर-विकार की प्राप्ति, शत्रु-पक्ष से विशेष हानि की सम्भावना, परिवार में अकारण कलह तथा अशांति, किन्तु माता-पिता से सुख, भाई-बन्धुओं का साधारण सुख, नौकर-चाकर से सुख में बाधा, नौकरी में अधिकारी वर्ग से मनमुटाव, द्रव्य की प्राप्ति, व्यापार में लाभ एवं जमीन-जायदाद से सुख, वर्ष के पूर्वार्ध में गुरु तथा शनि चतुर्थ हैं, अतः इनका पूजन-जपादि से शांति, देश-यात्रा में द्रव्य का व्यय, किसी अन्य व्यापार या उद्योग से सफलता, वर्ष के ४-५-१०-११ मास नेष्ट हैं, शेष मास शुभ फलकारक हैं।

मिथुन—(का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा) वर्ष मिले-जुले फलकारक है, पारिवारिक तथा शारीरिक चिन्ता से मन में अशांति, मकान-वाहन का सुख, साधारण नौकर-चाकर से अशांति एवं भाई-बहनों को कष्ट की प्राप्ति की आशंका, व्यापार से मध्यम आय होने का योग, पराक्रम से सफलता प्राप्ति का योग, किसी निकट सबंधी को विशेष कष्ट की प्राप्ति, नौकरी में वाद-विवाद-झंझटें लगी रहें, शनि की अढ़ैया चल रही है, अतः हनुमान जी का पूजन, पीपल की परिक्रमा से विशेष शांति की प्राप्ति, शत्रु-पक्ष से अकारण झगड़ा, वर्ष के ३-५-९-१२ मास नेष्ट हैं, शेष मास शुभ हैं।

कर्क—(ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो) वर्ष प्रायः उत्तम रहेगा, परिवार में मांगलिक कार्य होने का योग, पूर्व में निश्चित योजनाओं में सफलता की प्राप्ति का योग, स्त्री का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा; मन में अशांति की प्राप्ति की संभावना, माता-पिता का स्वास्थ्य कष्टप्रद रहेगा, स्त्री को उदर-विकार एवं बात रोग की प्राप्ति का योग है, शत्रुपक्ष से भय एवं अशांति रहे, फिर भी विजय-प्राप्ति का योग, अच्छे कार्य में सफलता और यश की प्राप्ति का योग, बंधु-पक्ष से मन-मुटाव, कुछ चोट-चपेट की संभावना, रक्त-विकार की संभावना, फिर भी सुख-शांति की प्राप्ति, वर्ष के २-४-८-११ मास नेष्ट हैं, शेष शुभ हैं।

सिंह—(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टो) वर्ष साधारण है, शारीरिक सुख उदर-रोग एवं वात-व्याधि से ठीक नहीं रहेगा, भाग्य-निर्माण में विशेष संघर्ष से सफलता का योग, आय के लिये भी संघर्षरत रहना पड़ेगा, उद्योग, पराक्रम में विशेष रुचि रहे, शत्रुपक्ष से सावधान रहें, स्त्री-सुख में बाधा का योग, नौकर-चाकर से सुख की आशा न्यून रहे, माता-पिता से सुख-शांति की प्राप्ति, मित्रों से अकारण मनमुटाव, शिक्षा में बाधा, शनि की साढ़ेसाती चल रही है, अतः हनुमान चालीसा का पाठ एवं शनिवार को पीपल की परिक्रमा से शांतिलाभ, वर्ष के १-४-९-१२ मास नेष्ट हैं, शेष शुभ फलदायक हैं।

कन्या—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ह, पे, पो) वर्ष साधारण है, शिक्षा में विशेष रुचि, शत्रु-पक्ष से विजय-प्राप्ति, मित्र-पक्ष से सामान्य समर्थन, शरीर में वात रोग की प्रबलता, स्त्री-पक्ष से साधारण सुख, संतान सुख में बाधा, नौकर-चाकर से अशान्ति की प्राप्ति, परिवार में कलह एवं अशांति का योग, कचहरी के कार्य में धन का निरर्थक अपव्यय, नौकरी में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, अधिकारी वर्ग से अशांति, आय एवं व्यापार के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, निरर्थक यात्रायें करने का योग, शनि की साढ़ेसाती चल रही है, अतः सुन्दर कांड का पाठ नित्य करने से शांति, वर्ष के १-५-८-१२ मास नेष्ट है, शेष ठीक हैं।

तुला—(रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते) वर्ष सामान्य रहेगा, शारीरिक सुख साधारण, अधिकारी वर्ग से सहयोग, शत्रु-पक्ष पर विजय-प्राप्ति का योग, भाई-बन्धु से विरोध का योग, व्यापार तथा पुरुषार्थ से धन की आय होती रहेगी, नौकरी में पदोन्नति का योग, माता-पिता का सुख ठीक रहेगा, विशेष संघर्ष से कचहरी के काम में सफलता का योग, यात्रा में धन का अपव्यय, चोरी का योग, पारिवारिक कलह के कारण मन में अशांति, याददाश्त में कमी, बुद्धि चंचल रहेगी, आर्थिक समस्या से परेशानी, शरीर में चोट की सम्भावना, शिक्षा में सफलता, वर्ष में साढ़ेसाती रहेगी, अतः शनि की आराधना करें, वर्ष के २-६-७-१२ मास नेष्ट हैं, शेष मास शुभ हैं।

वृश्चिक—(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू) वर्ष उत्तम है, शरीर-सुख उत्तम रहेगा, राजकीय मामले तथा नौकरी आदि में मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी, शत्रु से संघर्ष में सफलता, विद्यार्थी वर्ग को शिक्षा में सफलता की प्राप्ति, स्त्री के स्वास्थ्य में गड़बड़ी, माता-पिता के स्वास्थ्य में विघ्न की प्राप्ति, किसी निरर्थक कार्य में अपयश एवं द्रव्य का अपव्यय, नये व्यापार का प्रारम्भ, मित्रों से मनमुटाव, मकान, भूमि, निर्माण में विघ्न-बाधा की प्राप्ति, व्यापार में सफलता, परिवार में मांगलिक कार्य होने का योग, कुछ आकस्मिक खर्चे से व्यग्रता, वर्ष के ४-६-९-१२ मास नेष्ट हैं, शेष शुभ फलकारक हैं।

धन—(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ, भे) यह वर्ष उत्तम रहेगा, शारीरिक सुख उत्तम रहेगा, अधिकारी वर्ग से नौकरी आदि में मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि का योग, माता-पिता का सुख उत्तम रहेगा, शिक्षार्थी के लिए पठन-पाठन में रुचि की अभिवृद्धि, नौकर-चाकर से विवाद तथा अशांति, पारिवारिक कलह तथा विवाद से अशांति, कुछ द्रव्य हानि का योग है, स्वास्थ्य में गड़बड़ी, धार्मिक कार्यों में बाधा की प्राप्ति, नेत्र-पीड़ा तथा वाहन से चोट-चपेट लगने की सम्भावना, बाल-बच्चों को शारीरिक पीड़ा, वर्ष के १-४-५-९ मास नेष्ट हैं, शेष मास शुभ फलकारी हैं।

मकर—(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी) वर्ष मध्यम प्रकार का है, वात रोग से उदर-विकार तथा रक्त-दोष से खुजली एवं रक्त-स्राव आदि की सम्भावना, भाई-बन्धु से विवाद एवं अशांति, शिक्षा में तथा पठन-पाठन में विशेष रुचि, आय की प्राप्ति, फिर भी अशांति रहे, स्त्री-सुख में बाधा एवं स्वास्थ्य की गड़बड़ी से

व्यग्रता, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, किसी निरर्थक कार्य में द्रव्य का अपव्यय; भाई-बन्धु से सुख एवं शांति की प्राप्ति, नये व्यापार की योजना में सफलता की प्राप्ति, निरर्थक यात्रा में अपव्यय, नौकर-चाकर से खिन्नता की प्राप्ति, वर्ष के २-६-९-१२ मास नेष्ट हैं, शेष मास शुभ हैं।

कुंभ—(गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा) शनि की अढ़ैया चल रही है, वर्ष सामान्य रहेगा, सर्दी-गर्मी दोनों से कुछ शारीरिक कष्ट की प्राप्ति, छोटे भाई-बहनों से अशांति, स्त्री का स्वास्थ्य बाधाकारक रहेगा, पुत्रादि का स्वास्थ्य विघ्नकारक रहेगा, गृह-भूमि-संबन्धी समस्यायें लगी रहेंगी, किन्तु प्रयास द्वारा सफलता एवं विरोधी पराजित होते रहेंगे, द्रव्य का निरर्थक अपव्यय, मानसिक व्यथा की प्राप्ति का योग, अचानक रोगों का प्रकोप एवं द्रव्य का व्यय, अर्थ-सम्बन्धी योजना में विघ्न की प्राप्ति, शत्रु-पक्ष से मानसिक कष्ट, हनुमान चालीसा एवं पीपल वृक्ष के नीचे तिल के तेल का दीप जलायें, वर्ष के १-५-११ मास नेष्ट हैं, शेष शुभ हैं।

मीन—(दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची) शारीरिक सुख सामान्य रहेगा, पारिवारिक जीवन कटुतापूर्ण रहेगा, माता-पिता को शारीरिक पीड़ा रहेगी, व्यापार में लाभ रहेगा, तीर्थ-यात्रा का योग, शत्रु-पक्ष से निरंतर संघर्ष लगा रहेगा, शिक्षार्थी की उन्नति का योग, मित्र वर्ग से अशांति की प्राप्ति, आय का साधन बनेगा, भूमि-मकान के निर्माण में बाधा की प्राप्ति, वाहन से चोट-चपेट का भय, परिवार में कलह की प्राप्ति, मानसिक क्लेश की प्राप्ति, नौकर-चाकर से मतभेद एवं अशांति, निरर्थक द्रव्य का अपव्यय, वात-व्याधि एवं उदर विकार का योग, वर्ष के १-७-१०-१२ मास नेष्ट हैं, शेष मास शुभ फलदायक हैं।

साधारण ग्रह-गति फल

गुरु वर्ष के आरंभ से सिंह राशि पर रहेंगे अतः तुला, मकर, वृष राशिवालों को कष्टकारी है। उपरोक्त राशिवाले शांति-जपादि करते रहें तथा भाद्रपद शुक्ल १३, सोमवार २२-९-८० को कन्या राशि पर जायेंगे। अतः वृश्चिक, कुंभ, मिथुन राशिवालों को कष्टकर है, सो उपरोक्त राशिवाले को केले के वृक्ष की पूजा, चने की दाल, बेसन के लड्डू से पूजन करें, परिक्रमा करें, शांति प्राप्त होगी, पुखराज धारण करें, सुख की प्राप्ति होगी।

शनि वर्ष के आरम्भ से ही प्रायः कन्या राशि पर वक्री होते मार्गी रहेंगे, अतः सिंह, कन्या, तुला राशिवालों को साढ़ेसाती एवं धन, मेष राशिवालों को अढ़ैया रहेगी, तो उपरोक्त राशिवालों को पीपल की परिक्रमा, तिल के तेल का दीपक, काला तिल आदि से पूजन करना एवं शनि का जप, हनुमान जी से युक्त पीपल की परिक्रमा, सुन्दरकाण्ड का पाठ प्रतिदिन करें एवं लोहे का छल्ला धारण करें, सुख-शांति मिलेगी।

राहु वर्ष में सिंह तथा कर्क के रहेंगे।

केतु कुंभ एवम् मकर के रहेंगे, अतः इन राशिवालों को जपादि-शांति करनी चाहिये।

गौ, गणेश, गीता, गायत्री, गंगाजी का पूजन, पाठ, जप, स्नानादि से सभी प्रकार की ग्रह-बाधा-शांति होगी, सुख एवम् समृद्धि होगी।

॥ शुभम् भूयात् ॥

भारत में वर्तमान शिक्षा-प्रणाली

लेखिका—कुमारी दया कपूरिया, बी. ए.
अग्रसेन कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः,
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमैश्चालंकृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यं ते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणं॥

भारत अनादि काल से विश्व को अपना संदेश देता रहा है। इसका प्रधान माध्यम शिक्षा ही है। यह देश भारतीय संस्कृति एवम् परम्परा से पूर्ण है। इसकी अपनी ही विशिष्टता है।

"It is rich in Indian culture and its education. It surpasses all the nations of the world. Our metaphysical approach is unique. India will remain ever green by her original mythology and dogmas."

भारत की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में युग के प्रवाह के अनुसार परिवर्तन दिखाई पड़ता है।

"Change is the law of nature."

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति हमारे अन्दर परिवर्तन ला सकती है, पर हम प्रकृति को नहीं परिवर्तित कर सकते। भारत में शिक्षा की व्यवस्था विभिन्न तरह से है। भारत एक संघीय राज्य है। धर्म-निरपेक्षता की प्रधानता है। राज्य के नीति निर्देशक तत्व समान रूप से देश में लागू हैं। शिक्षा की व्यवस्था भी संविधान की विशेषता के अनुसार ही है। परन्तु उसका प्रयोग केन्द्रीय संस्थाओं के लिए ही लागू है। भारत की शिक्षा-प्रणाली में अनेक दोष देखने को मिलते हैं जैसा कि इंग्लैंड में उच्च वर्ग की, मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग के लिए विभाजन है।

भारत एक सफल देश तभी हो सकता है जबकि राष्ट्र की शिक्षा-नीति, एक ही शिक्षा-प्रणाली पूरे देश में लागू हो। बिना किसी भेदभाव के शिक्षा में परिवर्तन लाया जाये। देश में जितने राज्य हैं, उतनी ही शिक्षा की व्यवस्था है। शिक्षा-प्रणाली एक हो। क्षेत्रीय भाषा की प्रधानता हो, पर पूरे देश में एक शिक्षा की नीति की आवश्यकता है। इसका परिणाम विचित्र होता है। छात्रों में असन्तोष की भावना दिखायी पड़ती है। शिक्षक वर्ग भी पीड़ित दिखलायी पड़ता है जो राष्ट्र के लिए अशोभनीय है।

सभी विषमताओं को समझकर, राष्ट्र-हित का ध्यान रखते हुए, एक शिक्षा-प्रणाली पर जोर दिया जाये। देश के समग्र शुभचिन्तकों, विद्वानों, शिक्षाविदों, सन्तों से निवेदन है कि राष्ट्र-हित का ध्यान रखते हुए शिक्षा-जगत में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने पर सहमत हों।

आज की शिक्षा-प्रणाली मानवता को भूलती-सी जा रही है। परिणाम सर्वलक्षित होता है। देश में अत्याचार, अनाचार, चोरी, जमाखोरी एवम् अनेक प्रकार के व्यभिचार लोगों के हृदय में बसते जा रहे हैं, जिससे भारतीय जीवन क्षणभंगुर, रोगयुक्त नजर आ रहा है। क्षणिक सुख के लिए सारा देश नैतिकता के मार्ग से विचलित हो रहा है।

दुःख की बात यह है कि इस देश के नवयुवक वर्ग अच्छाई को छोड़कर बुराई की ओर अग्रसर हो रहा है। There is no moral or ethical balance in Indian's life. शिक्षा का प्रधान कार्य है, भारतीय परम्परा एवम् संस्कृति के अक्षुण्ण बनाये रखना।

संसार के सभी विकासशील देशों में शिक्षा की उचित व्यवस्था है। शिक्षा को सर्वोपरि रखा गया है। भारत में इसके विपरीत है। बालक ही राष्ट्र के कर्णधार हैं, उनके लिए शिक्षा की विभिन्नता,

उनके विचारों में संकीर्णता की भावना पैदा करना है। शिक्षा का स्तर विश्वव्यापी दृष्टिकोण का होना आवश्यक है।

भारत की शिक्षा केवल भारत के लिए ही नहीं, वरन् विश्व के लिए हो। समाचार-पत्रों में देखने को मिलता है कि रोजगार-पूरक शिक्षा हो, केवल कागजी प्रचार से काम चलनेवाला नहीं है। इसका व्यावहारिक रूप राष्ट्र के हित में देना होगा। सरकार इस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करे ताकि विद्यालय से छात्र निकलते ही अपनी रोजी-रोटी कमाने लग जायें, उन्हें बैठने का अवसर न रहे।

हमारे देश में बच्चों के पढ़ने के लिए अनेक प्रकार के स्कूल नजर आते हैं। कहीं-कहीं नर्सरी स्कूल, पब्लिक स्कूल, जहाँ मध्यम वर्ग एवम् उच्च वर्ग के ही बालक शिक्षा प्राप्त करते हैं। निम्न वर्ग के बालक इस प्रकार की शिक्षा से वंचित रहते हैं क्योंकि उनके पास पैसा नहीं है। सरकार का पावन कर्तव्य होता है कि शिक्षा जगत में समानता लाने में इस प्रकार के विद्यालयों को प्रश्रय न दे। इसका कारण यह भी है, जब हम जीवन में प्रवेश करने जाते हैं, नौकरी में सुविधा पहले उन्हें ही मिलती है जो अंग्रेजी माध्यम या पब्लिक स्कूल से आये हुये होते हैं। निम्न वर्ग या मध्यम वर्ग के बच्चे जो अंग्रेजी माध्यम से नहीं पढ़े होते हैं, उनका चुनाव नहीं हो पाता है। वे जीवन में अधिकांशतः भटकते रहते हैं।

अतः राष्ट्र-हित को ध्यान में रखते हुए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था की जाये जहाँ पर सबके बच्चे बिना किसी भेदभाव के पढ़ सकें। नौकरियों में किसी प्रकार के आरक्षण की व्यवस्था न की जाये।

किसी वर्ग का छात्र क्यों न हो, कुशल, योग्य, मेधावी का नौकरी में चयन किया जाये। किसी की प्रतिभा को दबाने का प्रयत्न न किया जाये। इससे बहुत बड़ी आत्म-ग्लानि होती है।

भारतीय शिक्षा में भारतीय संस्कृति को भी स्थायीत्व प्रदान किया जाना चाहिये। यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि संस्कृति का पाठ्यक्रम अनिवार्य रखा जाये। वास्तविकता से दूर रखकर आत्म-उत्थान सम्भव नहीं है। वह संस्कृत भाषा जिसमें जीवन के सभी तत्व छिपे हैं, बिना अध्ययन किये देश के नागरिकों का मंगल नहीं हो सकता। यह बात सत्य है। इसकी उपेक्षा न की जाये। भारतवर्ष का गौरव एवम् गरिमा इसी में निहित है।

भारत सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम को प्रश्रय दिया है। ग्राम स्तर तक इसकी व्यवस्था की है। करोड़ों रुपये इस पर खर्च होते हैं। समय-समय पर इसका निरीक्षण कार्य भी होना आवश्यक है। हमारी शिक्षा-प्रणाली में यह व्यवस्था की जानी चाहिये कि कम पढ़ी-लिखी महिलायें शिक्षा प्राप्त कर अपनी जीविका प्राप्त कर सकें।

शिक्षा जीवन भर चलनेवाली प्रक्रिया है, शिक्षा में धर्मशास्त्र तत्वों का समावेश हो जिससे छात्र का जीवन उज्ज्वल, पवित्र हो सके। मन ही सब कुछ है :—

"It is its own mind.
That can make hell of heaven and heaven of hell."

मन 'Opens the gate of paradise.'

धन्य है वह शिक्षा जिसमें अमरता है, प्राण है, जो आत्म-संयम की भावनाओं से ओतप्रोत है, धन्य है वह नगरी जहाँ अमृत की सरिता बहती है। कर्म, उपासना तथा ज्ञान के संगम में सभी स्नान करके अपने को पवित्र करें।

———

vijaylene
SAREES
...a woman's
second love,
naturally
VIJAY
SYNTHETICS
SHIRTINGS
SAREES
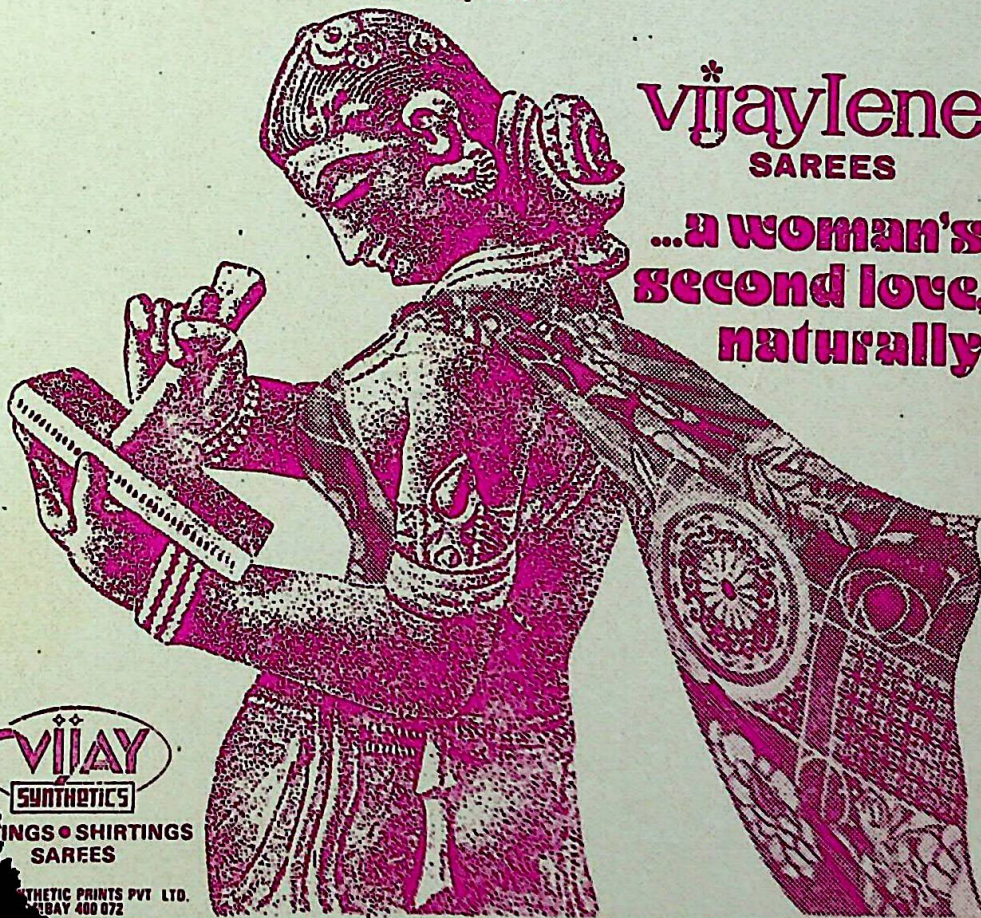
श्री सारस्वत सभा, काशी के प्रधान मंत्री पं० डा० शिवनारायण झिंगन द्वारा प्रकाशि
श्री विश्वनाथ दत्त द्वारा दी इउरेका प्रिंटिंग वर्क्स प्रा० लि०, गोदौलिया, वाराणसी से मुद्रित